पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

मार्गशीर्ष-पौष, कलियुगाब्द 5119, दिसम्बर 2017

वायु प्रदूषण

बढ़ रहा है, नई बीमारियाँ ला रहा है

एसजेवीएन विश्व पटल पर

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- 412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- आरएचपीएस को "जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने" की श्रेणी में "**गोल्ड शील्ड**" तथा "**सिल्वर शील्ड**"।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए '**गोल्ड शील्ड**' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU

सीआईएन: L40101HP1988GOI008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद् हेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवी नो दुहाताम्॥

हे भू देवी! तेरे लिए ईश्वर ने ग्रीष्म-वर्षा, शरद-हेमन्त, शिशिर और मोहक मधुमास (वसन्त) आदि छः ऋतुओं की रचना की है। तू पूरे साल भर दिन रात हमारे मनोरथो को पूर्ण करते हुए हमें उत्कर्ष प्रदान करें।

वर्ष : 17 अंक : 12

मातृवन्दना

मार्गशीर्ष-पौष, कलियुगाब्द 5119, दिसम्बर 2017

सम्पादक
डॉ.दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

eAmail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PIA820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।

सम्पादक: डॉ। दयानंद शर्मा।

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वायु प्रदूषण

हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि-मुनियों ने पर्यावरण के प्रति अपने उतरदायित्व का अनुभव किया था। उन्होंने सूर्य, अग्नि, वायु, इन्द्र-मरूत्, वरूण आदि को प्रत्यक्ष देवता मान कर उनकी आराधना की। पृथ्वी को माता की संज्ञा दी 'मातृभूमि पुत्रोंअहं पृथिव्याः' अथर्ववेद और नदियों को देवी स्वरूप माना। पर्वत शिखरों, पेड़ पौधों तथा अन्य वनस्पतियों में देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा कर उन्हें महत्व प्रदान किया। वर्तमान में हमने अपने विज्ञ पूर्वजों की अवहेलना कर, प्रकृति एवं पर्यावरण में असन्तुलन पैदा कर स्वयं को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है।

सम्पादकीय	स्वास्थ्य के लिए हानिकारक	3
प्रेरक प्रसंग	विदेशियों का नहीं परमेश्वर	4
चिंतन	महर्षि अरविंद का उत्तरपारा	5
आवरण	पर्यावरण सुरक्षा की नीयत	6
संगठनम्	लव जिहाद हिंदू समाज और	10
देश प्रदेश	सरस्वती विद्या मंदिर के एक	12
देवभूमि	हिमाचल के प्रमुख शिव मंदिर	14
पुण्य जंयती	गुरू गोबिंद सिंह जी का जीवन	16
घूमती कलम	मुस्लिम तीर्थ सऊदी में योग	17
विविध	विदेश नीति पर दृढ़ इच्छाशक्ति	19
काव्य जगत	आतंक की निकली हवा	21
कृषि	जैविक खेती	22
स्वास्थ्य	डायबिटीज या मधुमेह	23
पुण्यस्मरण	लोक संस्कृति के पोषक	24
महिला जगत	रानी पिंगला	25
विश्वदर्शन	शिक्षा, संस्कार और आनंद	26
समसामयिकी	महारानी पद्मिनी का जौहर	27
दृष्टि	सात सालों से 39 सड़कों	29
प्रतिक्रिया	कश्मीरियों ने सदैव पाकिस्तान	30
बाल जगत	न दर्द की परवाह की	31

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

मनोरंजन के घटिया तौर तरीके

समझाने बुझाने का समय लद गया। यहां तक की बच्चे मां बाप के प्रयास को भी अस्वीकार करने में कोई झिझक महसूस नहीं कर रहे हैं। आज सारा मनोरंजन सिल्वर स्क्रीन पर संचित हो कर सिमट गया है। युवाओं की चाहत और इच्छाओं के अनुरूप ही फिल्म प्रोड्यूसर फिल्मों और धारावाहिकों का निर्माण कर रहे हैं। धारावाहिकों और फिल्मों के बीच गाने इतने फूहड़ तरीके के हैं कि परिवार संग फिल्में नहीं देखी जा सकती। फिल्म सैन्सर बोर्ड भी अपनी कैंची को धार नहीं दे रहा है। जब हम राष्ट्र भक्ति, देश प्रेम की बात करते हैं तो पहला प्रश्न वासना में डूबा हुआ युवा वर्ग हमारी आय की बात सुनने को बिलकुल तैयार नहीं। उसे तो हाय हैलो वाला कल्चर चाहिए। जीन्स, टॉप, स्कर्ट, बिकनी, चिकनी, चुपड़ी, देह जो डेट पर जाने वाली संगत में डूबा हो उसे राष्ट्रगान से क्या मतलब। हमारी भूल है जिस युवा वर्ग के कन्धों पर देश का भविष्य है उसे देश से क्या लेना देना। उनके लिए देश और स्वयं की देह मांग की वस्तु है। अपने देश में हमारे युवाओं की इच्छा पूर्ण नहीं होगी तो वे विदेश जा कर अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर लेंगे। यह फिल्मों की सीख है। विदेशों में रह रहे युवक अपने वतन लोटने को तैयार नहीं। समय दूर नहीं जब हमारे युवा अपने साथ अपना धर्म देश भी बेच देंगे।❖ **के.सी. शर्मा, गगल, कांगड़ा**

महोदय,

आज देश में लगभग 90 प्रतिशत लोग विभिन्न प्रकार के नशे की चपेट में आ गए हैं। घरों में माता-पिता तथा बुजुर्ग नशे का सेवन करने से परहेज करते हुए दिखाई दे रहे हैं मगर आज की युवा पीढ़ी अपने भविष्य की परवाह न करते हुए इस नशे के चुंगल में फंसते ही जा रहे हैं। जो कि उन्हें अपने लिए व देश निर्माण के लिए बिल्कुल घातक है। मैं अपनी लेखनी के जरिए व मातृवन्दना के माध्यम से देश के नशाखोरों को समझाने की कोशिश करता हूं कि नशा हमारे जीवन को नरक समान बना देता है। नशा करने वाले व्यक्ति हमेशा आधी बेहोशी में ही रहते हैं न तो उन्हें अपने परिवार का ध्यान रहता है और न ही अपना ध्यान रहता है।नशा कई तरह का होता है। मैं लोगों को यह भी याद दिलाना चाहता हूं कि नशा केवल बीड़ी, सिगरेट, चरस, तथा शराब आदि का ही नहीं होता है बल्कि किसी को अपना लक्ष्य हासिल करने का नशा होता है, नशा अच्छाई का भी होता है और बुराई का भी। बुराई का नशा मनुष्य के जीवन को नरक समान बना देता है। हजारी प्रसाद दिवेदी ने एक किताब में कुटज नामक पौधें का वर्णन किया था, जो चट्टानों को कुरेदकर अपना भोजन प्राप्त करता है।हमें भी जीवन में निराश होकर नशे का प्रयोग नहीं करना चाहिए। संघर्षमय जीवन ही अनुपम नशा है। चरस, गांजा, बीड़ी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू सभी जीवन को नरक बना देते हैं। नशे के दौरान व्यक्ति मरता नहीं है मगर मरने के काबिल हो जाता है।व्यक्ति का दिमाग और जिस्म दोनों शून्य हो जाते हैं।ध्यान रहे कि चौरासी लाख योनियों के बाद यह मनुष्य का शरीर मिलता है यह भी नशे में गंवा दिया तो क्या फायदा है। जो किसी और का भला नहीं कर सकता है, उसका जीवन बिल्कुल व्यर्थ है नशे से व्यक्ति के फफेड़े गल जाते हैं केंसर जैसी बीमारियां लग जाती है एक व्यक्ति घर में नशा करता है तो परिवार के सारे सदस्य नरक भोगने को मजबूर हो जाते हैं शराबी व्यक्ति के लिए रिशते कोई मायने नहीं रखते हैं।वह मां, बेटी, तथा बहन में भेदभाव नहीं कर सकता। संस्कार उसके लिए बेमतलब के होते हैं यही नहीं आम व्यक्ति की अपेक्षा साधु सन्यासी भी गुटखा आदि खाकर चुर नाले में पड़ा दिखाई दिया तो उस दौरान उसका पूरा शरीर कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े से भरपूर था चाहे उसे कोई कुत्ता खाए या फिर कोई जानवर खा जाए उसे कोई फर्क नहीं पड़ा। इसलिए इस बहुमूल्य जीवन में नशे का त्याग करो, आध्यामिकता का नशा करो, राम नाम का नशा करो, शुभ कर्मों का नशा करो और अपने जीवन का सुधार करो। ❖ **खुशीराम, लक्कड़ बाजार, बरोट, मण्डी।**

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com
आप हमें व्हॉट्सएप, फेसबुक, टिव्टर व यू-ट्यूब पर भी संपर्क कर सकते हैं।

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री गुरूगोबिंद सिंह जयंती एवं पन्द्रह पौष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (दिसम्बर)

वीर देवता पूजन दिवस	03 दिसम्बर
नौसेना दिवस	04 दिसम्बर
शौर्य दिवस	06 दिसम्बर
श्री रूक्मिणी अष्टमी	08 दिसम्बर
विश्व मानव अधिकार दिवस	10 दिसम्बर
सफला एकादशी	13 दिसम्बर
क्रिसमस दिवस	25 दिसम्बर
श्री गुरु गोविन्द सिंह जयंती	29 दिसम्बर
पन्द्रह पौष उत्सव	29 दिसम्बर

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वायु प्रदूषण

वायुमण्डल की निर्मलता से प्रकृति में सजीवता परिलक्षित होती है। प्रकृति में पर्यावरण की शुद्धता से ही पृथ्वी पर मानव एवं मानवेतर जीव जन्तु ठीक प्रकार से सांस ले सकते हैं। पर्यावरण अर्थात् हमारे चारों ओर प्रकृति तथा मानव द्वारा निर्मित जो जीवित तथा निर्जीव पदार्थ हैं, वे सब मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। इस प्रकार मिट्टी,पानी, हवा, पेड़ पौधे, जीव जन्तु आदि सब पर्यावरण के अंग हैं। इस सृष्टि में इन सबके बीच में एक सामन्जस्य स्थापित है, जो नैसर्गिक रूप से बना रहता है। जीवमण्डल एवं प्रकृति में विद्यमान सामन्जस्य में तनिक भी पारिस्थितिक फेर बदल अथवा परिवर्तन उत्पन्न हो जाने से जो परिणाम समक्ष दिखाई देते हैं वही प्रदूषण कहलाते हैं। हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि-मुनियों ने पर्यावरण के प्रति अपने उतरदायित्व का अनुभव किया था। उन्होंने सूर्य, अग्नि, वायु, इन्द्र-मरूत्, वरूण आदि को प्रत्यक्ष देवता मान कर उनकी आराधना की। पृथ्वी को माता की संज्ञा दी 'माताभूमि पुत्रोअहं पृथिव्या:' (अथर्ववेद)और नदियों को देवी स्वरूप माना। पर्वत शिखरों, पेड़ पौधों तथा अन्य वनस्पतियों में देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा कर उन्हें महत्व प्रदान किया। वर्तमान में हमने अपने विज्ञ पूर्वजों की अवहेलना कर, प्रकृति एवं पर्यावरण में असन्तुलन पैदा कर स्वयं को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है।

पृथ्वी के समस्त प्राणि एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। विश्व का प्रत्येक पदार्थ एक-दूसरे द्वारा प्रभावित रहता है। आज औद्योगिक विकास, भौतिक समृद्धि एवं सुख सुविधाओं की लालसा ने पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। महात्मा गांधी ने ठीक कहा था कि प्रकृति के पास मानव की आवश्यकता पूर्ण करने के साधन हैं, लोलुपता के नहीं। स्वार्थवश मनुष्य इतना विवेकहीन हो चुका है कि वह प्रदूषण के दुष्परिणामों को देखते हुए भी अनदेखा कर रहा है और उसके निवारण हेतु किये जाने वाले समुचित उपायों में शिथिलता बरत रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली तथा एन.सी.आर. में इस वर्ष नवम्बर मास में वायु प्रदूषण का स्तर इतनी खतरनाक स्थिति में पहुंच गया कि वहां स्कूल तथा अन्य शिक्षण संस्थान कई दिनों तक बन्द कर देने पड़े तथा बच्चों एवं किशोरों को घर में बैठने के लिए बाध्य होना पड़ा। प्रात:काल की सैर को जहां स्वास्थय वर्द्धक माना जाता है वहां आज प्रशासन द्वारा निर्देश दिया जा रहा है कि दिल्ली तथा उसके साथ सटे शहरों में प्रात:काल कोई बाहर न निकले क्योंकि सुबह की हवा में प्रदूषण की मात्रा बहुत अधिक है। वेदों में वायु का महत्वपूर्ण स्थान है। शुक्ल यजुर्वेद की काण्व संहिता में उसे अग्रगामी और कल्याणकारी माना गया है। समस्त प्राणी उसका वरण करते हैं। किन्तु आज हमने उसे कितना प्रदूषित कर दिया है। इसके लिए हम सब दोषी हैं।

निरन्तर बढ़ती आबादी के कारण शहर बढ़ते जा रहे हैं। आजीविका हेतु शहरों की ओर पलायन हो रहा है। गांव के बाजार छोटे कस्बों का रूप धारण कर रहे हैं। बड़े कस्बे नगर बन चुके हैं। इसलिए निर्माण कार्यों बहुमंजिली इमारतों, सड़कों तथा उद्योगों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। सुख-सुविधा हेतु वैज्ञानिक उपकरणों तथा यातायात के साधनों में अतिशय वृद्धि दिखाई देती है। यही कारण है कि धूल, धुंआ, वैज्ञानिक उपकरणों की घातक गैसों एवं डीजल पैट्रोल के वाहनों एवं अन्य यन्त्रों के धुंए से वायुमण्डल इतना प्रदूषित हो चुका है कि सांस लेना भी दूभर हो गया है। जंगलों, पेड़-पौधों की निरन्तर घटती संख्या से यह समस्या और भी अधिक विकट हो चुकी है। शहर ही नहीं अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में भी कमोवेश यही हालात हैं। किसानों द्वारा पराली जलाने से, कच्ची सड़कों की उड़ती धूल से, ट्रैक्टर आदि कृषि उपकरणों तथा अन्य वाहनों के धुंए से, कीटनाशकों के प्रयोग से भी स्वच्छ हवा की कमी प्रतीत हो रही है। अब यदि स्वयं को तथा नई पीढ़ी को स्वस्थ एवं सुरक्षित रखना है तो पर्यावरण की सुरक्षा हेतु स्वयं ही समुचित उपाय ढूंढने होंगे। देश के हर नागरिक का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह प्रदूषण के दूरगामी दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए मात्र अपनी सहजता और सुख सुविधा के लिए पर्यावरण को और अधिक प्रदूषित न करे। सामाजिक स्तर पर भी जागरूकता लाना जरूरी है, केन्द्र और राज्यों की सरकारों को भी सख्ती से बढ़ते प्रदूषण को रोकने के उपायों का अनुपालन सख्ती से करवाना चाहिए। शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में खाली जगहों पर पेड़-पौधे लगाने चाहिए। घातक गैसों एवं धुंएं का उत्सर्जन कम से कम हो ऐसे उपाय किये जाने चाहिए।

विदेशियों का नहीं परमेश्वर का यंत्र बनना है

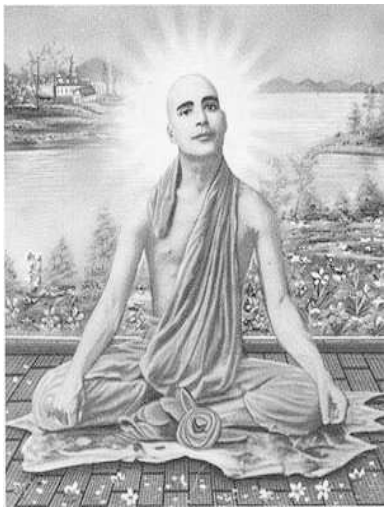

तीर्थराम गणित में (भविष्य में स्वामी रामतीर्थ) उत्तम श्रेणी में एम.ए. उत्तीर्ण हुए। प्राचार्य बेल साहब ने उन्हें अपने घर पर बुलाया और कहा ''तीर्थराम मैंने आपका नाम प्रान्तीय अधिकारियों को सूचित किया है। उन्होंने मुझसे अच्छे सक्षम तरूणों के नाम मांगे हैं। अगर आपको मंजूर है तो प्रान्तीय शासन में उच्चस्तरीय पदाधिकार मिल सकता है।'' तीर्थराम ने उत्तर दिया, ''गुरूवर, शासकीय नौकरी मुझे थोड़े ही चाहिए जिस विद्या का अर्जन मैंने श्रमपूर्वक किया है वह अपने स्वार्थ के लिए या पेट भरने के लिए नहीं है। उसे मुझे अपने देशबंधुओं को मुक्त-हस्त से देना है।'' आचार्य महोदय ने नव तरुण को हितचिन्तक के नाते आग्रहपूर्वक पुनः समझाने का प्रयास किया। तब तीर्थराम बेधड़क बोले -''मुझे परकीय शासकों की नौकरी नहीं चाहिए। पैसा कमाना, ताबेदार बनकर जी-हुजूरी करना यह सब मेरे पिंड में नहीं है। मुझे अंग्रेजों का यंत्र नहीं बनना है। अगर यन्त्र बनना है तो मैं परमेश्वर के हाथ का यन्त्र बनूंगा। ❖

ऊँच नीच का भाव मिटाना

एक महिला सेवाव्रती एक छोटे से गाँव में गयी। वहाँ सभी वर्गो के लिए एक संस्कृत संभाषण शिविर की योजना की। कक्षा चलाने के लिए एक बड़े कक्ष की आवश्यकता थी। उच्च सरकारी पद से सेवानिवृत्त एक धनी ब्राह्मण सज्जन अपने बड़े कमरे को शिविर चलाने हेतु देने को तैयार हो गये। सेवाव्रती महिला ने सभी के बन्धुओं को उसी स्थान पर संस्कृत में ही बात करने का शिक्षण देना प्रारम्भ किया। मकान मालिक भी कुतूहलवश वहाँ आये, सपरिवार कार्यक्रम में भाग लेने लगे।

चार-पाँच दिनों के बाद उस सज्जन ने सेवाव्रती से कहा ''मैं प्रसन्न हूँ। आपका उद्देश्य पूरा हो गया''। सेवाव्रती ने आश्चर्य से कहा ''अभी तो चार दिन ही हुए हैं। दिन तो और शेष हैं। तभी कार्य पूरा होगा।

उस पर सज्जन ने काह ''देखिये, यद्यपि आप संस्कृत संभाषण शिविर चला रही हैं, पर मैं समझ गया कि आप का उद्देश्य दूसरा है। मेरे घर में आज तक ब्राह्मण को छोड़कर कोई अन्य निम्न श्रेणी का व्यक्ति नहीं आता था। अस्पृश्य भी भाग लेते हैं। आपने ऊँच-नीच का भाव मिटा दिया है। सबको एक करना आपकाा उद्देश्य है। इस पवित्र कार्य को आगे बढ़ाइये। प्रभु आपको यश दें।'' ❖

महर्षि अरविंद का उत्तरपारा का प्रसिद्ध भाषण

महर्षि अरविन्द का 30 मई 1909 को उत्तरपाड़ा में विशेष अवसर पर भविष्य के बारे में दिया गया महत्वपूर्ण भाषण है जिसके आधार पर उन्होंने आगामी समय की देश की दशा व दिशा को बताया। वे कहते हैं- अपना सनातन हिन्दू धर्म वास्तविक रूप में क्या है, बहुत थोड़े लोग जानते हैं। अधिकांश लोग तो यही समझते हैं कि, जैसे दुनिया के और धर्म हैं, वैसा ही यह भी है। परन्तु विश्व के अन्य धर्मों में कुछ श्रद्धा की बातें हैं और कुछ नीति विषयक बोध हैं। दिव्य जीवन का साक्षात्कार है हमारे धर्म में।

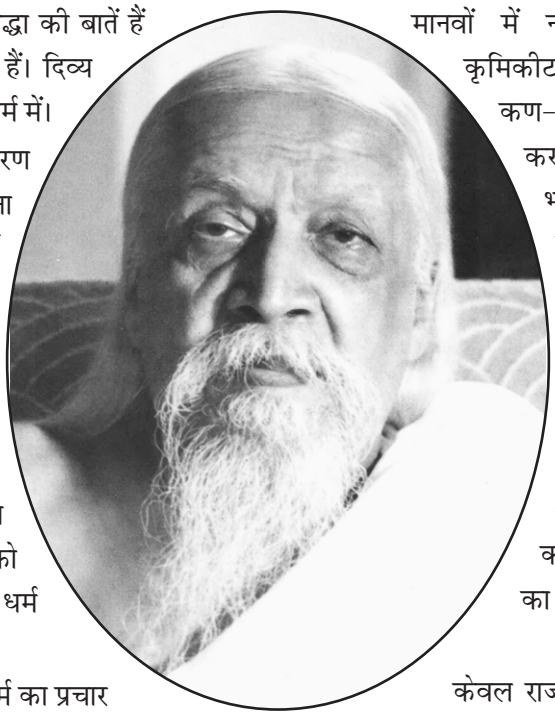

'हमारे धर्म में उच्चारण को उतना महत्व नहीं है, जितना आचरण को है। प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि गहन अरण्यों में रहते थे। यहां एकांतवास में वे वर्षों तक मननचिंतन करते थे। उस आधार पर सम्पूर्ण मानवता के वास्तविक कल्याण के मार्ग उन्होंने देखे। वाणी द्वारा उन्हीं का दर्शन उन्होंने जनता को कराया। इस प्रकार अपने इस धर्म का निर्माण होता रहा।।।।'

'अपने इस सनातन धर्म का प्रचार विश्व भर में करने के लिए ही आज भारतवर्ष जागृत हो रहा है। सम्पूर्ण विश्व के सुख के लिए ही भारतवर्ष का उत्थान हो रहा है। सद्य:काल की हमारी देश की जागृति केवल हमारे सुख के लिए नहीं है। दूसरों को कुचलने के लिए तो वह निश्चित ही नहीं है। चिरंतनकाल से भारतवर्ष ने सम्पूर्ण मानव जाति का हित करने की आकांक्षा ही अपने हृदय से संजोई है।

'भारत के उत्थान का अर्थ है, हमारे सनातन धर्म का उत्थान। भारत की महानता का अर्थ है, हमारे सनातन धर्म की महानता। परमेश्वर ने इस विश्व में धर्म संस्थापन करने के लिए ही भारतवर्ष की योजना की है। हमारा धर्म चिरकालिक धर्म है। वह विश्व के सब देशों को, सब कालों में उपकारक है। दुनिया में यही एक धर्म है, जो अपने उपासकों को भगवान् के निकट ले जाता है और उनसे प्रत्यक्ष भेंट कराता है। सत्य का वास्तविक आग्रह यही धर्म करता है। सत्य का वास्तविक मार्ग यही धर्म दिखाता है। हमारा धर्म कहता है, कि भगवान् केवल मानवों में नहीं वे पशु-पक्षियों में, कृमिकीटकों में, घट-घट में और कण-कण में विराजमान् है। करने, कराने वाला सब कुछ भगवान् है। ऐसी महान् श्रद्धा केवल हमारा धर्म ही प्रस्थापित करता है। हमारा धर्म जीवन के प्रत्येक अंग का अंतर्बाह्य निर्धारण करता है। हमारा धर्म हमें मृत्यु के उस पार ले जाता है और अमरता से साक्षात् कराता है। दुनिया में इस ढंग का यही एक धर्म है।।।।'

'राष्ट्रीयता का मतलब केवल राजनीति से नहीं है। राष्ट्रीयता का मतलब है हमारा धर्म। राष्ट्रीयता ही हमारा उपसना पंथ है। राष्ट्रीयता ही हमारी श्रद्धा है। यही बात दूसरे शब्दों में इस प्रकार कही जा सकती है, 'हमारा सनातन धर्म ही हमारी राष्ट्रीयता है।' 'जब कभी यह राष्ट्र अपने सनातन धर्म से दूर हटेगा, तब इसका अध:पतन होगा और यदि किसी समय सनातन धर्म का विनाश सम्भव हो, तो समझ लीजिए कि उसके साथ-साथ इस राष्ट्र का विनाश भी अटल है सनातन हिन्दू धर्म ही भारत की राष्ट्रीयता है। ❖

पर्यावरण सुरक्षा की नीयत

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

पर्यावरण व्यक्ति, समाज और विश्व से जुड़ा हुआ मुद्दा है। जलवायु परिवर्तन ने पर्यावरण असंतुलन की स्थिति पैदा कर दी है। उदाहरण के तौर पर उत्तरी भारत में अक्टुबर-नवंबर माह में प्राय: स्मॉग से बढ़ती जन कठिनाइयां सामान्य घटना बनती जा रही है। हालांकि, हमारे राजनीतिक दल इस गंभीर विषय पर एक-दूसरे पर दोषारोपण और कुंठित राजनीति का अवसर तलाश रहे हैं। ध्यातव्य है कि पर्यावरण से जुड़े इस मुद्दे पर करोड़ों लोगों का स्वारस्थ्य, सुरक्षा और रोजगार दांव पर है। जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण को लेकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बैठकें होती हैं। दरअसल पर्यावरण मानव की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। संसाधनों के दोहन में सबसे बड़ी भागीदारी मनुष्य की ही रही है। अधिकाधिक भौतिक साधन प्राप्ति की प्रत्याशा में प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध संसाधनों का मनमाना दोहन किया गया जिसके परिणामस्वरूप सूखा, बाढ़, महामारी, भू-स्खलन, ओजोन परत का नष्ट होना, ग्लोबल वार्मिंग, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाएं दिन-प्रति-दिन विकराल रूप धारण करती जा रही हैं।

अगर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी क्रम में चलता रहा तो पर्यावरण का मनुष्य पर से आवरण उठ जाएगा। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण ही एकमात्र उपाय बचता है। वैसे पर्यावरण संरक्षण विगत कई दशकों से चर्चा का विषय रहा है, किंतु यह अधिकांशत: वाद-विवादों, चर्चाओं, गोष्ठियों, सम्मेलनों तथा समारोहों तक ही सीमित रहता है। जरूरत है इसके फलक में वृद्धि की।

इस संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता की खास जरूरत है और इसके लिए पर्यावरण शिक्षा सर्वाधिक सरल एवं कारगर उपाय साबित हो सकता है। पर्यावरण शिक्षा कुछ और नहीं, अपितु पर्यावरण संरक्षण में जन सहभागिता बढ़ाता है।

वस्तुत: किसी भी कार्य या उसके उद्देश्य के सफल होने की संभावना तब अधिक हो जाती है, जब उसका व्यापक जन आधार हो। लोगों के सहयोग के बिना पर्यावरण संरक्षण की बात करना बेमानी है और यह कारगर हो नहीं सकता। विगत पांच-छ: दशकों में यह अनवरत देखा गया है कि पृथ्वी की जीवन रक्षक क्षमता का तीव्र गति से ह्रास हो रहा है। ह्रास का मुख्य कारण वनों का मानव विकास की दृष्टि से नाश, प्रजातियों का विलुप्त होना और जल, मृदा एवं वायु का प्रदूषण है। विश्व में बढ़ती आबादी से भू-भाग और अन्य संसाधन सिमटकर छोटे होते जा रहे हैं। बड़े-बड़े उद्योगों के निर्माण तथा उद्योगों की स्थापना के लिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे जा रहे हैं। देश में अनवरत बढ़ती आबादी के लिए भोजन तथा आवास की समस्या हल करने के लिए बड़ी मात्रा में जंगलों का सफाया किया गया।

चरागाह के रूप में वन क्षेत्रों का अनियंत्रित उपयोग तथा वन्य प्राणियों के शारीरिक अवशेष इकठ्ठा करने हेतु इनका अवैध शिकार अपनी गति से जारी है। वनों से विभिन्न प्रकार की वनोपजें प्राप्त करने के लिए ठेकेदारी ने भी वनों को नष्ट किया है। आदिम जातियों की झूम कृषि प्रणाली भी जंगलों के विनाश में प्रमुख भूमिका निभाती है। एक रिपोर्ट के अनुसार मानवीय गलतियों के कारण प्रतिवर्ष लगभग दो लाख वर्ग किमी वन क्षेत्र कम हो रहा है।

हमारा शारीरिक और मानवीय स्वास्थ्य, जल,

वायु की शुद्धता और आस-पास के वातावरण की स्वच्छता पर निर्भर करता है, किंतु औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हो रही है, जिनमें उद्योगों से उत्सर्जित जहरीली गैसें, वाहनों का धुआं, वातानुकूलित यंत्रों की गैस, कूड़ा-करकट व ईंधन का धुआं प्रमुख हैं। इसके परिणामस्वरूप आंखों में जलन, फेफड़ों में धूल, रक्त कैंसर, दमा आदि जैसी खतरनाक बीमारियां आम हो गई हैं। उद्योगों द्वारा विसर्जित अवशिष्ट पदार्थ जल स्रोतों में मिलने से हम रोगग्रस्ती होते हैं। रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाइयों के बढ़ते प्रयोग, कल-कारखानों का कचरा, भूमि से आसानी से न विघटित होने वाले पॉलीथिन, प्लास्टिक के टुकड़े, कांच व अन्य जहरीले तत्वों से भूमि प्रदूषित हो रही है। जो भूमि की उर्वर शक्ति क्षीण करता है, वस्तुतः इन सबके पीछे पर्यावरण संरक्षण के बारे में लोगों में अज्ञानता है। इस अज्ञानता को दूर करने के लिए पर्यावरण शिक्षा जरूरी है।

पर्यावरण और वन मंत्रालय ने जलवायु परिवर्तन पर लोगों को जागरूक किया है कि यदि पृथ्वी के औसत तापमान का बढ़ना इसी प्रकार जारी रहा तो आगामी वर्षों में भारत को इसके दुष्परिणाम झेलने होंगे। 120 संस्थाओं एवं लगभग 500 वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण भारत में लोग कृषि, जल, पारिस्थितिकी तंत्र एवं जैव-विविधता व स्वास्थ्य से उत्पन्न समस्याओं से जूझते रहेंगे। वर्ष 2030 तक औसत सतही तापमान में 1.7 से 2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

भारत ही नहीं, अमेरिका में भी हुए नए शोधा के अनुसार आर्कटिक क्षेत्र में विगत दो हजार वर्षों में तापमान सबसे अधिक हो गया है जो इस बात का प्रबल संकेत है कि मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। शोध के अनुसार विगत सात हजार वर्षों में एक ऐसी प्राकृतिक स्थिति बननी थी जिसमें आर्कटिक के क्षेत्र को सूर्य की कम-से-कम रोशनी मिलनी चाहिए थी। इस प्रक्रिया के तहत आर्कटिक को अब भी ठंडा होते रहना था, हालांकि ऐसा नहीं हुआ।

वर्ष 1990 के बाद आर्कटिक का तापमान बढ़ता जा रहा है और वर्ष 1950 के बाद से ही और अधिक तेजी आ गई है। वैज्ञानिकों ने भू-गर्भीय रिकार्डों और कंप्यूटरों की मदद से विगत दो सदियों में तापमान का खाका तैयार किया है। वैज्ञानिकों ने चेताया है कि अगर आर्कटिक का तापमान बढ़ता ही रहा तो इससे समुद्र के जल स्तर में तेजी से बढ़ोतरी हो सकती है। आर्कटिक गर्मी को सोख रहा है और बर्फ खत्म हो रही है। गर्मी बढ़ रही है। इससे समुद्र का जल स्तर बढ़ेगा। अगर विश्व भर के नेताओं ने जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाए तो दुनिया को सर्वनाश से कोई नहीं बचा सकता है।

विदित है कि विगत कुछ वर्षों में भारत में बदलते मौसम के दौरान हजारों लोगों ने अपनी जान गंवाई है। भारत में लू लगने से हाइपोमेथिया और हृदय व सांस संबंधी रोग बढ़ रहे हैं। बदलते मौसम के कारण बीमारियों के प्रति मनुष्य का शरीर संतुलन नहीं बन पा रहा है जिससे हर साल मौतों का आंकड़ा बढ़ता जा रहा है। भारत में बदलते मौसम की मार अन्य देशों की अपेक्षा अधिक है। सरकार को अपनी योजना में इस ओर भी ध्यान देना होगा कि जलवायु बदलाव के इस दौर में उसकी मशीनरी गंभीर आपदाओं व प्रतिकूल मौसम के लिए कहीं अधिक तैयार रहे।

सरकार और लोगों को पर्यावरण के मुद्दे पर गंभीर होना होगा, नहीं तो साल-दर-साल तापमान में वृद्धि का यह चक्र चलता ही रहेगा। सारतः प्रदूषण, खासकर वायु प्रदूषण की रोकथाम हेतु मेडलिन और रियो जैसे दक्षिण अमेरिकी शहरों की तरह शहरों में केबल कार व्यवस्था से भी वाहन संख्या घटाने और ट्रैफिक जाम से मुक्ति की दिशा में काम करना अत्यंत महत्वपूर्ण होगा, प्रभावी होगा। हमें सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को सर्वसुलभ और आरामदायक बनाने का काम भी प्राथमिकता से करना होगा। कुल मिलाकर प्रदूषण की समस्या के सभी पक्षों को समय रहते दबोचने से ही अपेक्षित सफलता मिलेगी। साथ-ही-साथ इसके लिए कृषि, उद्योग, परिवहन, उर्जा, शहरी स्थानीय निकाय और पंचायतीराज मंत्रालयों के संयुक्त प्रयासों की जरूरत व सहयोग अपेक्षित है और इस मुद्दे पर जहां तक राजनीति का सवाल है तो स्वस्थ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तो हो, परंतु खोखली राजनीति जरा भी नहीं। ❖

हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय क्षेत्रीय केंद्र, धर्मशाला, हि.प्र.

हरियाणा में पराली के प्रयोग वाले उद्योगों का प्रस्ताव तीन वर्षों से अटका

सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनजल (एन.जी.टी.) की फटकार के बाद आंकड़ों के जरिए खुद को बेहतर बताने वाली हरियाणा सरकार भी पराली व उसके अवशेष के प्रबंधन को लेकर किसी भी तरह से गंभीर नहीं दिखाई पड़ती है। शायद यही वजह है कि पिछले एक दशक से इस समस्या का कोई स्थायी समाधान नहीं निकल सका है। हर साल दिल्ली व एन।सी।आर। में प्रदूषण की मात्रा बढ़ने पर एक-दूसरे पर ठीकरा फोड़ने वाली सरकारों ने पराली के ठोस प्रबंधन पर कोई काम नहीं किया। हरियाणा में हर साल करीब 69 हजार मीट्रिक टन पराली का अवशेष निकलता है। ज्यादातर जिलों में किसानों की ओर से इस अवशेष को या तो जलाया जाता है या फिर कृषि उपकरणों के जरिए मिट्टी में मिक्स कर दिया जाता है। किसानों को हर साल पराली नहीं जलाने को लेकर हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व कृषि विभाग की ओर से जागरूकता मुहिम छेड़ी जाती है लेकिन किसानों पर इसका प्रभाव न के बराबर ही पड़ता है। डराने के लिए हर साल एक हजार से ज्यादा किसानों पर कानूनी कार्रवाई कर लाखों रूपए वसूले जाते हैं लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। आलम यह है कि जागरूकता के नाम पर पिछले एक दशक में करोड़ों रूपए पानी की तरह बहाए जा चुके हैं।

13 लाख हैक्टेयर में 69 हजार मीट्रिक टन निकलती है पराली

हरियाणा में धान की खेती उतरी क्षेत्र के 10 जिलों में होती है। कृषि विभाग के आंकड़ों के मुताबिक करीब 13 लाख हैक्टेयर में धान की खेती की जा रही है। इन क्षेत्रों से हर साल 69 हजार मीट्रिक टन पराली निकलती है। हरियाणा में पशुओं को चारे के तौर पर खिलाने के लिए पराली का उपयोग बंद हो चुका है। ऐसे में अगली फसल को लेकर ज्यादातर किसानों द्वारा पराली को जलाने का काम किया जाता है।

बायोमास और पराली आधारित उद्योगों का प्रस्ताव अटका

पराली का उपयोग बायोमास, गत्ता और पावर बनाने में किया जा सकता है। हरियाणा की मौजूदा खट्टर सरकार ने शुरूआती दौर में पराली के अवशेषों का स्थायी समाधान निकालने की दिशा में बायोमास और गत्ता उद्योग लगाने की कवायद शुरू की थी। सरकार की ओर से सम्बन्धित विभाग को बायोमास के लिए अधिकृत भी किया गया लेकिन पिछले तीन सालों से यह मामला अटका हुआ है। ❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059A33644
Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCIA7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi
Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMCA28190
Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/XARay, Blood Tests.

जलवायु परिवर्तन का दिखने लगा दुखदायी असर

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

जलवायु परिवर्तन से मानसूनी बारिश का ट्रेंड बदल रहा है। भारत के औसत तापमान में एक डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक की वृद्धि हुई है। बारिश की अवधि सिमट रही है, लेकिन सालभर में होने वाली कुल बारिश की मात्रा में फिलहाल कोई कमी नहीं आई है। इसके चलते भूजल रिचार्ज नहीं हो रहा है, जिसका नतीजा खतरनाक साबित होगा। यह जानकारी भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक केजे रमेश ने दी। उन्होंने कहा 'बारिश के पानी को बहकर समुद्र में जाने के लिए नहीं छोड़ देना चाहिए। बूंद-बूंद को संरक्षित करना जरूरी है।'

रमेश यहां पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन आफ इंडिया की ओर से आयोजित एक कार्यशाला में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि वायु प्रदूषण और हवा में नमी के बढ़ते-घटते स्तर से कई तरह की मौसमी बीमारियां पैदा हो रही हैं। इसी कार्यशाला में पूर्व केंद्रीय पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने मौसम वैज्ञानिक से खुद को जोड़ते हुए कहा 'मौसम का इस तरह बदलना खतरे से खाली नहीं है।' लेकिन उनकी चिंता चिन्हित उन 88 औद्योगिक समूह को लेकर है, जहां पर्यावरण प्रदूषण का स्तर चिंता जनक स्तर को पार कर चुका है। यहां के लोगों की बिगड़ती सेहत को

लेकर शासन प्रशासन का मौन और भी खतरनाक है। जयराम रमेश ने कहा कि गर्मी का मौसम जहां 90 दिनों का होता था, वह बढ़कर 120 दिन भी होने लगा है। पर्यावरण प्रदूषण ने इसे और गंभीर बना दिया है, जिसका सबसे ज्यादा असर लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ा है। तपती और चिलचिलाती धूप से बच्चे और बुजुर्ग प्रभावित हो रहे हैं। पीएचएफआइ अध्यक्ष प्रोफेसर के. श्रीनाथ रेड्डी ने कहा कि पेरिस समझौते से अमेरिका के हाथ खींच लेने के बाद विश्व पर्यावरण के लिए अलग तरह की चुनौती पैदा हो गई है। ऐसे में इस तरह की संस्थाओं की भूमिका और बढ़ गई है।

जाने-माने पर्यावरणविद डॉक्टर मनोरंजन होता के अनुसार, जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण को लेकर कुल सौ से अधिक मानक बनाए गए हैं। लेकिन उन पर अमल कराने वाली एजेंसियों का सक्रिय न होना अफसोस जनक है। उनका कहना है कि देश में पराली जलाने से तापमान बढ़ रहा है। इसका सबसे अधिक असर उत्तरी राज्यों पर पड़ रहा है। जाड़े के दिनों में इस क्षेत्र में हवा की गति अमूमन धीमी रहती है, जो जोखिम को और बढ़ा देती है। जबकि दक्षिण व पश्चिम के राज्यों में समुद्री हवाओं के चलने से यह समस्या पैदा नहीं होती है।

गर्म लू से बचाव के बारे में पूछे एक सवाल के जवाब में मौसम विज्ञानी ने कहा कि इससे मरने वालों की संख्या में भी लगातार इजाफा हो रहा है। लेकिन कई राज्यों ने अपने यहां चेतावनी जारी करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि इसका सबसे अधिक असर जन स्वास्थ्य पर पड़ता है। फाउंडेशन के प्रबंधक भार्गव कृष्ण ने कहा कि जन सहभागिता के बगैर तापमान बढ़ने की चुनौती और देश को खुले में शौच मुक्त बनाने में सफलता संभव नहीं है।

दिल्ली के प्रदूषण का पशु-पक्षियों पर बुरा असर

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण का असर परिंदों की संख्या पर पड़ रहा है। राजधानी में इनकी संख्या तेजी से कम हो रही है। बीते एक साल में माइग्रेटरी बर्ड्स समेत दिल्ली में जो पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती थीं और जितने पॉइंट्स पर बर्ड सेंचुरी में ये दिखती थी, उसमें कमी आ गई है। असोला भाटी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी के पक्षी विशेषज्ञ सुहेल मदान ने बताया कि पिछले दो हफ्तों में दिल्ली में जिस तरह से प्रदूषण का स्तर आठ से दस गुना ज्यादा हो गया है, उससे शहर में पाई जाने वाली विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों में 60 फीसदी तक कमी आई है। वे बताते हैं कि पहले असोला भाटी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी में ही 100 पॉइंट्स पर 250 पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती थीं। लेकिन अब पिछले 10 दिनों में इन पॉइंट्स की संख्या घटकर 40-50 ही रह गई है। हम लगातार इस तरह का सर्वे कर रहे हैं कि परिंदे बर्ड सेंचुरी में किधर-किधर पाए जाते हैं। वे बताते हैं कि पिछले एक साल में दिल्ली में प्रदूषण की भयावह स्थिति के कारण गोरैया, हंस, चील, किंगफिशर पक्षी समेत कई प्रजातियां कम हो गई हैं।

इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन की डिप्टी डायरेक्टर राधा गोयल ने बताया कि जिस तरह से दिल्ली में इंसानी शरीर पर असर पड़ते हुए उनकी लाइफ एक्सपेक्टेंसी रेट लगातार गिर रहा है। ठीक उसी तरह यह परिंदों में और भी कम हो रहा है। कार्बन मोनोऑक्साइड, पीएम 2।5 और पीएम 10 जैसे प्रदूषित कण दिल्ली में परिंदों की लाइफ एक्सपेक्टेंसी को दो गुनी रफ्तार से कम कर रहे हैं। यह बेहद खतरनाक है। ❖

लव जिहाद हिंदू समाज और देश के लिए खतरा

-डॉ. सुरेन्द्र जैन

जयपुर के आध्यात्मिक मेले में विश्व हिंदू परिषद द्वारा वितरित लव जिहाद संबंधित साहित्य पर जिस तरह की आपत्ति सेकुलर बिरादरी ने व्यक्त की है उससे उनकी हिंदू विरोधी मानसिकता स्पष्ट हो जाती है। विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन ने कहा है कि आज पूरा विश्व लव जिहाद के षडयंत्र पर चिंता व्यक्त कर रहा है। पश्चिम में इसे रोमियो जिहाद कहा जाता है। भारत में भी लव जेहाद नाम केरल उच्च न्यायालय ने दिया है। ऐसे ही एक मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस सेकुलर बिरादरी को अवश्य बताने चाहिए। ***उन्होंने पूछा कि- (क) केवल हिंदू लड़कियां ही मुस्लिम लड़कों से शादी क्यों करती हैं? (ख) मुस्लिम लड़कियां हिंदू लड़कों से क्यों नहीं? (ग) ऐसी शादी के बाद क्यों केवल हिंदू लड़कियां ही धर्म परिवर्तन करती हैं, मुस्लिम लड़के क्यों नहीं? (घ) ऐसी शादी के बाद क्यों कई लड़कियां ढूंढने पर भी नहीं मिलती?***

केरल व कर्नाटक के बाद अब पूरे देश में इस तरह के उदाहरण सामने आ चुके हैं बहुत मामलों में तो हिंदू लड़कियों ने स्वयं प्रेस के सामने उपस्थित होकर अपने उत्पीड़न की पीड़ा को व्यक्त किया है। मुंबई की एक मॉडल ने तो अभी हाल ही में आपबीती बताई थी। कई बार पकड़े गए कुछ अपराधियों ने तो स्वीकार भी किया है कि वे इन गैर मुस्लिम लड़कियों को एक षड्यंत्र के अंतर्गत ही फंसाते हैं जिसके लिए उन्हें पैसा मिलता है। इन सब तथ्यों के बावजूद सेकुलर बिरादरी, हिन्दुओं द्वारा देश की रक्षा के लिए चलाये जा रहे, इस जागरण अभियान को, कैसे अपमानित कर सकती हैं?

डॉ. जैन ने कहा कि भारत में तो लव जिहाद का एक नया आयाम सामने आ रहा है। बहकाई गयी कई लड़कियों को आतंकवादियों के पास भेजा जा रहा है। केरल में पहले एक पीड़ित पिता द्वारा गुहार लगाई गई थी, अब एक मां ने भी अदालत में अपील करके अपनी बेटी को बचाने की मांग की है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय को इन मामलों की जांच एनआईए को सौंपनी पड़ी। केरल से गायब हुई कई लड़कियों को आतंकी संगठनों में भर्ती करने का अंदेशा समाज के कई वर्गों को है। आज लव जिहाद राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा बन चुका है ।

डॉ. जैन ने यह भी कहा कि भारत के कई स्थानों पर इन षड्यंत्रों के कारण भीषण असंतोष पनप रहा है। लद्दाख में कई वर्षों से जिहादियों के द्वारा चल रहे इस षड्यंत्र को अब चरम सीमा पर पहुंचाया जा चुका है। इसलिए पिछले दिनों कई बौद्धों ने कुछ जिहादियों की पिटाई भी की। पड़ोसी देश श्रीलंका में भी इसी कारण मुस्लिमों और बौद्धों में झड़पों के समाचार आ रहे हैं। म्यानमार में रोहिंग्याओं के साथ संघर्ष के मूल में भी लव जिहाद की ही घटनाएं थी। अब समय आ गया है की इस षडङंत्र को सेकुलरिज्म की आड़ में छिपाने की जगह उजागर किया जाए और गैर मुस्लिमों को सावधाान किया जाए। कश्मीर के उदाहरण से सब को सबक सीखना चाहिए।

मुस्लिम समाज को म्यानमार से पाठ सीखना होगा। लद्दाख व श्रीलंका में शुरुआत हो चुकी है। जिहादियों के पापों को सेकुलर बिरादरी कितना भी छुपा ले पीड़ित समाज एक सीमा के बाद प्रतिकार करेगा ही। इससे सौहार्द तो समाप्त होगा ही, सह अस्तित्व के लिए भी संकट निर्माण होगा। उन्हें जेहाद के हर रूप से तौबा करनी होगी तथा गैर मुस्लिमों के साथ प्रेम से रहना सीखना होगा। ❖

बजरंग दल का प्रदेश में सदस्यता अभियान

बजरंग दल हिमाचल प्रदेश ने सदस्यता अभियान शुरू किया है जो 5 दिसम्बर तक चलेगा। वह निर्णय बजरंग दल की एक बैठक में लिया गया। इसके लिए शिमला महानगर में योजना बनाई गयी। बैठक की अध्यक्षता विश्व हिन्दू परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष अमन पुरी ने की। कार्यक्रम शुरू होने से पूर्व अशोक जी सिंघल की पुण्य तिथि पर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धार्जलि दी गयी। प्रांत सह संगठन मंत्री नीरज दौनेरिया ने बजरंगदल की जानकारी देते हुए कहा की बजरंग दल 1984 से हिन्दू समाज में सेवा सुरक्षा संस्कार के ध्येय वाक्य को लेकर काम कर रहा है। उन्होंने जानकारी दी कि पूरे भारत में यह अभियान 19 नवम्बर से 5 दिसम्बर तक रहेगा। अपने प्रांत में भी सभी संगठनात्मक जिलों में 51000 युवाओं को बजरंग दल से जोड़ने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा आज प्रदेश में हिन्दुओं को एकजुट होने की आवश्यकता है क्योंकि आज प्रदेश में धर्मान्तरण, गौ हत्या, गौ तस्करी, लव जिहाद, तथा संदिग्ध आंतकियों की हिमाचल में घुसपैठ ऐसी घटनाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है, पाकिस्तान जिंदाबाद, आईएसआईएस के समर्थन में नारों का लिखा जाना तथा कुल्लू से आईएसआईएस के ऐजेंट का पकड़ा जाना किसी बड़े षड्यंत्र की ओर इशारा करता है। जिससे बचने के लिए युवाओं का जागरूक तथा संस्कारित होना बहुत जरूरी है। इसी उद्देश्य को लेकर युवाओं को जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि शिमला महानगर में पांच हजार युवाओं को बजरंगदल से जोड़ा जाएगा, जिसके लिए स्कूल तथा कॉलेज के विद्यार्थियों को अधिक से अधिक जोड़ने का प्रयास रहेगा। बैठक में बजरंग दल संयोजक सुशील शर्मा, विनीत विशनोई, अमर सिंह वर्मा, आरडी। शर्मा, कृष्ण कुमार, सुमन प्रमाणिक, भारतीय गौवंश संवर्धन परिषद् के प्रांत संयोजक राम ऋषि भारद्वाज तथा बजरंग दल एवं विहिप के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। ❖

दिव्यांग युवाओं के लिए बद्दी में जॉब फेयर

प्रांत के दिव्यांग युवाओं को हिमाचल के उद्योगों में समायोजित करने के लिए अन्यथा सक्षम राष्ट्रीय आजीविका सेवा केंद्र ऊना व औद्योगिक संघ लघु उद्योग भारती मिलकर एक अभियान की शुरुआत करेंगे। इसके तहत राज्य के दिव्यांगों को व्यावसायिक पुर्नवास एवं रोजगारोन्मुख करने के लिए औद्योगिक क्षेत्र बद्दी में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता लघु उद्योग भारती बददी अध्यक्ष संजय बतरा ने की। वहीं कार्यक्रम में विशेष तौर पर राज्यस्तरीय अन्यथा सक्षम राष्ट्रीय सेवा केंद्र ऊना के केंद्र प्रमुख डा. बी. के. पांडे उपस्थित हुए। बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि ऊना में पंजीकृत होकर विभिन्न केंद्रों में प्रशिक्षण पाने वाले दिव्यांग युवकों का किसी प्रकार हिमाचल के उद्योगों में व्यावसायिक पुनर्वास किया जाए। इन हुनरमंद युवाओं को उनकी योग्यता के आधार पर उद्योगों में समायोजित किया जा सकेगा। पत्रकारों को संबोधित करते हुए ऊना केंद्रों के प्रमुख डा. बी. के. पांडे व लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष संजय बत्तरा, वित्त सचिव संजय आहुजा, उपाध्यक्ष चेतन नागर व ईएसआई कमेटी के चेयरमैन कश्मीर सिंह ठाकुर ने बताया कि दोनों पक्षों में आज दिव्यांगों के व्यावसायिक पुनर्वास को लेकर अहम वार्ता हुई। सबने एक ही चिंता व्यक्त की कि किसी भी प्रकार से शारीरिक रुप से अक्षम लेकिन हुनरमंद युवा जो कि किसी न किसी तकनीकी विधा का ज्ञान रखता है को उसकी योग्यता के हिसाब से नौकरी दी जाए। इसके पीछे सभी की एक ही मंशा थी कि शारीरिक रुप से अक्षम समाज का यह अभिन्न अंग सिर उठाकर अपना जीवन व्यतीत कर सके और उसको अपनी जरुरत के लिए किसी का मुंह न ताकना पड़े। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के प्रदेश महामंत्री राजीव कंसल, तरसेम शर्मा, अनिल मलिक, विजय कुमार व कार्यालय सचिव शिल्पा चंदेल आदि उपस्थित थे। ❖

सरस्वती विद्या मंदिर के एक और लाल ने विदेशों में चमकाया नाम

शिमला (विश्व संवाद केंद्र), 27 अक्तूबर। सरस्वती विद्यामंदिर औहर से पढ़े विशाल ने अपनी प्रतिभा के दम पर विदेशों में अपना एवं देश का नाम रोशन किया है। बिलासपुर के गेहड़वी के रहने वाले विशाल शर्मा पर सरस्वती विद्यामंदिर स्कूल के संस्कारों का गहरा प्रभाव रहा है। यही कारण है कि उनको हाल ही में फ्रांस की एक कंपनी ने निदेशक के पद पर नियुक्ति प्रदान की है। थेल्स नाम की इस कंपनी में उनका सालाना पैकेज एक करोड़ तय हुआ है। इस सफलता से प्रफुल्लित विशाल का मानना है शिक्षा चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है ऐसे में शैक्षणिक स्तर में गुणवता विकास के लिए अच्छे संस्थान से शिक्षा ग्रहण करना भी बेहद आवश्यक रहता है। विशाल शर्मा ने पहली कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक हर क्लास में टॉप किया है यही कारण है उसे नौकरियों के पीछे भागना नहीं पड़ा बल्कि नौकरियां ही उसके पीछे भागी। थेल्स कंपनी ने मेट्रो रेल के कई प्रोजेक्ट बनाये हैं।

फ्रांस की इस कंपनी थेल्स ने दुबई में विशाल का कार्यक्षेत्र बनाया है। बैडमिंटन में रूचि रखने वाले विशाल ने अनेकों पुरस्कार भी जीते हैं। उनके शैक्षणिक जीवन की शुरूआत एसवीएम औहर से हुई है यहीं से उन्होंने मैट्रिक तक की परीक्षायें उतीर्ण की इसके बाद जमा एक बिलासपुर और जमा दो की परीक्षा हमीरपुर से पास की। उसके बाद दिल्ली में बीटेक तथा पुणे से एमबीए की डिग्री हासिल की। थेल्स कंपनी में वह 2006 से लगातार काम कर रहे हैं। 2012 से 2016 तक वह इंद्रा कंपनी में बतौर डायरेक्टर ऑपरेशन स्पेन में भी काम कर चुके हैं। थेल्स कंपनी ने इनकी प्रतिभा को देखते हुए दूसरी बार एक करोड़ का पैकेज ऑफर करके प्रोजेक्ट डायरेक्टर के पद पर नियुक्ति दी है। इनके पिता पेशे से दुकानदार हैं, उन्होंने अपने बच्चों पर किसी प्रकार का दबाव कैरियर को लेकर नहीं बनाया। यही कारण रहा कि विशाल को अपने सपने पूरे करने में कोई दिक्कत नहीं आयी और आज वही विदेशों में सफलता का परचम लहराने में कामयाब हुए हैं। ❖ *शेष पृष्ठ 20....*

कागज के पन्नों पर भारतीय पत्रकारिता

केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में विवि के सहायक आचार्य डा. जय प्रकाश की 'सूचना से संवाद' पुस्तक का विमोचन दिव्य हिमाचल के प्रधान संपादक अनिल सोनी, विवि के कुलपति डा. कुलदीप चंद अग्निहोत्री और संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर ने किया। पत्रकारिता के भारतीय परिप्रेक्ष्य पर लिखी गई इस पुस्तक की खूब सराहना हुई। कार्यक्रम के मुख्यातिथि दिव्य हिमाचल मीडिया ग्रुप के प्रधान संपादक अनिल सोनी ने कहा कि इस पुस्तक की रचना अनूठी है। ऐसी रचनाओं से सत्य के सेतु की पड़ताल होती है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर न तो अभिव्यक्ति का मूल्यांकन है, न ही सीमाकंन है। उन्होंने कहा कि हमें अपने भीतर झांकने की आवश्यकता है, न कि सोशल मीडिया पर निर्भरता की। उन्होंने कहा कि यह किताब इसलिए भी बहुत अच्छी लगी कि इसमें सत्य के साथ समय की परिभाषा है।

श्री सोनी ने कहा कि चुनाव प्रचार को ही देखें, तो सूचनाएं सत्य के सामर्थ्य से दूर करती रही हैं। उन्होंने कहा कि इस किताब से कई श्रृंखलाएं बन सकती हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं विवि के कुलपति डा। कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि दिव्य हिमाचल मीडिया ग्रुप ने हिमाचल में पत्रकारिता को स्थापित करने का बड़ा काम किया है। उन्होंने डा। जय प्रकाश को बेहतर विश्लेषक बताते हुए कहा कि वह किसी भी विषय का विश्लेषण करते हैं। कुलपति ने कहा कि भ्रम के कारण कई बार सूचना गलत हो सकती है, लेकिन एक पत्रकार को चाहिए कि वह सूचना की पड़ताल कर ले। केंद्रीय विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डा। जयप्रकाश की सूचना से संवाद पुस्तक में 106 पन्ने हैं, इस पुस्तक में 27 चैप्टर हैं। इसमें सोशल मीडिया से लेकर भारतीय संस्कृति को भी सूचना के साथ जोड़ा गया है। इस अवसर पर शोधार्थी संजीव कुमार और शिक्षा विभाग से मनोज कुमार सहित पत्रकारिता के छात्र व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। ❖

नई तकनीक - अब जीवाणु करेंगे गंगा की सफाई

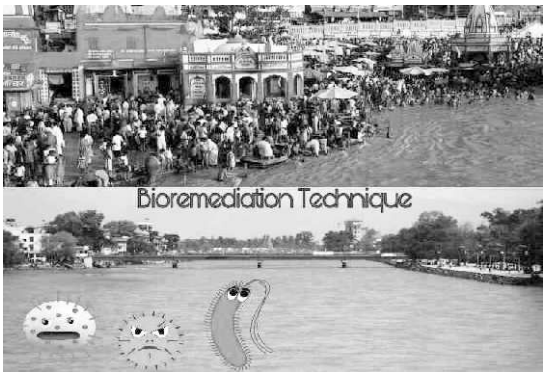

गंगा सफाई की महत्वाकांक्षी योजना को समय पर पूरा करने की जल्दी में अब केंद्र सरकार एक नई तकनीक 'बैक्टीरियल बॉयोमेडिटेशन' का सहारा लेने की तैयारी में है, जिसमें 'मलभक्षक' जीवाणुओं का इस्तेमाल किया जाएगा। इस तकनीक में मौजूद प्रदूषक तत्वों को खत्म करने के लिए एक खास किस्म के मल भक्षक जीवाणुओं का इस्तेमाल किया जाता है ये जीवाणु पानी को किसी तरह का नुकसान पहुंचाए बिना उसमें मौजूद मल, रसायनिक तत्वों और जैविक कचरे का भक्षण कर उसे साफ कर देते हैं। इस प्रक्रिया में किसी तरह की दुर्गंध भी नहीं होती है। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) ने पटना के बाकरगंज नाले में इसका सफल परीक्षण करने के बाद अब ऐसी दो और पायलट परियोजनाओं को मंजूरी दे दी है। इनमें से एक पटना में और दूसरी इलाहबाद में चलाई जाएगी। एनएमसीजी ने एक नोट में कहा है कि जल शोधन संयंत्रों के तैयार होने तक गंगा और उसकी सहायक नदियों में नालों से मल-जल का गिरना जारी रहता है। उसे रोकने के लिए जल शोधन संयंत्रों के समानांतर एक नवोन्मेषी व्यवस्था बहुत जरूरी है। बैक्टीरियल बायोमेडिटेशन तकनीक ऐसी ही एक व्यवस्था है। इसमें लागत और समय दोनों कम लगता है साथ ही गंदे नालों में किसी तरह के बड़े बदलाव की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है। एनएमसीजी के अनुसार इस तकनीक के इस्तेमाल पर छह से आठ महीने का समय लगता है। इस पर गंदे नालों में पानी के प्रवाह के अनुसार सात लाख से सात करोड़ रूपए तक की लागत आ सकती है।

इससे गंदे पानी को गंगा में जाने से रोकने में बहुत मदद मिलेगी। एनएमसीजी के अनुसार यह परियोजना कारपोरेट सामाजिक दायित्व के तहत निजी और सरकारी सहयोग से चलाई जाएगी। इसके लिए कानपुर के गोलाघाट, रानीघाट और बुधियाघाट स्थित नालों, इलाहबाद में ससरखादेरी और मवैया नाले, वाराणसी में नगवा और राजघाट नाले तथा हावड़ा में रामकृष्ण मलिक घाट तथा तेलकाल घाट के नालों सहित कई और स्थानों के नालों को भी चिन्हित किया गया है। ❖

नक्सली नहीं बनने दे रहे हैं गरीबों के मकान

सरकारी कर्मचारियों की लापरवाही, महीनों एक ही विभाग में फाइल अटकना, कई साल बीतने पर भी काम न होना, ऐसे ढेरों किस्से अक्सर सुनाई पड़ते हैं। लेकिन दंतेवाड़ा के पास दर्जनों ऐसे गांव हैं, जहां सरकार ने तो काम करने के लिए बजट तक मंजूर कर दिया है, मगर काम इसलिए पूरा नहीं हो पा रहा, क्योंकि नक्सलियों ने उस काम के लिए स्वीकृति नहीं दी है। नक्सल प्रभावित इलाकों में प्रधानमंत्री आवास योजना का ऐसा ही हाल है। झोपड़ियों में जिंदगी गुजार रहे ग्रामीणों के लिए पक्का मकान सपना है इस योजना के तहत दंतेवाड़ा में 2600 मकान बनने हैं। इसमें अभी 437 पर ही काम पूरा हुआ है।

प्रशासन चाहते हुए भी काम नहीं करा पा रहा है। दंतेवाड़ा के जिला पंचायत सीईओ डॉ. गौरव सिंह का कहना है कि हमारे लिए ग्रामीणों की सुरक्षा सबसे अहम है, काम शुरू करने से नक्सली उन्हें नुकसान पहुंचा सकते हैं। दंतेवाड़ा से 30 किमी दूर कुआकोंडा ब्लॉक का एक गांव, यहां सरकार ने सबसे अधिक 143 पीएम आवासों को स्वीकृत किया है।

मई 2016 में इस दुर्गम गांव में लोगों ने उत्साहित होकर काम भी शुरू किया। पांच घर बनने ही शुरू हुए कि नक्सलियों ने काम रूकवा दिया। साल भर यहां के लोग मकान बनाने की इजाजत लेने नक्सलियों के पास अर्जी देते रहे, हाल में नक्सलियों ने 143 में से सिर्फ 30 मकानों को मंजूरी दी है। उनकी शर्त है कि इनकी छत भी एस्बेस्टस शीट या टीन की ही होगी। अफसरों से शिकायत करने के जुर्म और मुखबिरी का आरोप लगाते हुए नक्सलियों ने यहां के सरपंच को मारने का फरमान जारी किया है। ❖

हिमाचल के प्रमुख शिव मंदिर

काठगढ़ महादेव- कांगड़ा जिले के इंदौरा उपमंडल में काठगढ़ महादेव का मंदिर स्थित है। यह विश्व का एकमात्र मंदिर है, जहां शिवलिंग ऐसे स्वरूप में विद्यमान है, जो दो भागों में बंटे हुए हैं अर्थात मां पार्वती और भगवान शिव के दो विभिन्न रूपों को ग्रहों और नक्षत्रों के परिवर्तित होने के अनुसार इनके दोनों भागों के मध्य का अंतर घटता-बढ़ता रहता है। ग्रीष्म ऋतु में यह स्वरूप दो भागों में बंट जाता है और शीत ऋतु में पुन: एक रूप धारण कर लेता है। क्योंकि शिव का यह दिव्य लिंग शिवरात्रि को प्रकट हुआ था, इसलिए लोक मान्यता है कि काठगढ़ महादेव शिवलिंग के दो भाग भी चंद्रमा की कलाओं के साथ करीब आते और दूर होते हैं। शिवरात्रि के दिन इनका मिलन माना जाता है। यह पावन शिवलिंग अष्टकोणीय है तथा काले, भूरे रंग का है। शिव रूप में पूजे जाते शिवलिंग की ऊंचाई 7-8 फुट है जबकि पार्वती के रूप में आराध्य हिस्सा 5-6 फुट ऊंचा है। मान्यता है, त्रेता युग में भगवान राम के भाई भरत जब भी अपने ननिहाल कैकेय देश जाते थे, तो काठगढ़ में शिवलिंग की पूजा किया करते थे।

भूतनाथ महादेव- भूतनाथ महादेव का मंदिर छोटी काशी के नाम से विख्यात मंडी जिला में मुख्य शहर में ब्यास नदी के किनारे है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। मंदिर में स्थापित नंदी बैल की प्रतिमा बुर्ज की ओर देखती प्रतीत होती है।

शिरगुल महादेव- सिरमौर व शिमला की सीमा पर करीब 11969 फुट की ऊंचाई पर स्थित पौराणिक एवं ऐतिहासिक श्री शिरगुल महाराज चूड़धार की चोटी पर पूजे जाते हैं। चूड़धार में जहां अब विशालकाय शिव प्रतिमा है, वहां पर प्राकृतिक शिवलिंग होता था। ऐसा भी कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने अपने हिमालय प्रवास के दौरान यहां शिव की आराधना के लिए शिवलिंग की स्थापना की थी।

रंगनाथ महादेव- नौवीं शताब्दी में बने रंगनाथ महादेव के मंदिर को महाराजा एलदेव ने बनवाया था। हालांकि इसके परिसर में कई लघु मंदिर भी थे। लोगों के अनुसार, जब बारिश के लिए इस शिव मंदिर में स्थित शिव लिंग पर जलधारा डालते थे और वह सतलुज नदी में मिलती थी। तो एकाएक बारिश शुरू हो जाती थी। यह एक पुरानी मान्यता थी।

गसोतेश्वर महादेव- कहा जाता है कि गसोता शब्द गोस्रोत को मिलाकर बना है यानी गऊओं के लिए पानी का स्रोत। पांडव अज्ञात वास के दौरान छिपने के लिए जगह की तलाश कर रहे थे। यहां पर भीम ने घराट चलाने की सोची और रात को ब्यास के पानी को मोड़ कर कूहल से घराट की तरफ लाने लगे, तो किसी के आने की आवाज का आभास हुआ। उन्होंने सोचा कि सुबह हो गई है। भीम सामान यहां फेंक कर चल दिए। पांडव गसोता पहुंचे तो यहां पर भयंकर सूखा पड़ गया और पानी के बिना गऊएं तड़पने लगीं। भीम ने भूमि पर गदा से प्रहार किया और वहां पर जल स्त्रोत फूट पड़ा। यह जल स्रोत आज भी यहां हैं। गसोता महादेव में शिवलिंग हजारों साल से स्थापित है।

शिव बाड़ी- जिला ऊना के गगरेट उपमंडल में सोमभद्रा नदी के किनारे जंगल में स्थित भगवान शिव का यह स्थान अति रमणीक है। मान्यता है कि किसी समय यह जंगल गुरू द्रोणाचार्य की नगरी हुआ करता था और यहीं पर पांडवों ने गुरू द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या के गुरू सीखे। इस मंदिर का इतिहास काफी पुराना है। ❖

औषधीय गुणों से भरा है तिलमिल पानी

पांगी मुख्यालय किलाड़ से करीब आठ किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत धरबास में तिलमिल नामक स्थान पर अनेकों पौष्टिक तत्वों से भरपूर तिलमिल पानी है। जिसके आगे मिनरल वाटर भी कुछ नहीं है पानी में कई ऐसे आयरन मौजूद हैं जिससे कई बीमारियां खत्म हो जाती हैं। तिलमिल पानी जंगल से निकला है। सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस पानी का शमशी स्थित अपनी लैब में परीक्षण कर तिलमिल पानी को 100 प्रतिशत शुद्धता का प्रमाण-पत्र मिला है। तिलमिल पानी में अनेक खूबियां होने के कारण रियासत काल से प्रसिद्ध रहा है। रियासत काल में चंबा का राजा पांगी के दौरे पर आता था तो उस के लिए तिलमिल पानी मंगवाया जाता था। इसमें यह खासियत है कि यह खराब भी नहीं होता है आज भी कोई वीआईपी पांगी आता है तो इस पानी को मंगवाया जाता है। रियासत काल में पानी से करीब दो किलो मीटर की दूरी पर सराय भवन का निर्माण करवाया गया था। जहां पर लोग ठहर जाते थे। नब्बे के दशक तक लोगों के आने जाने का रास्ता वहीं से था। लोग तिलमिल पानी का भरपूर सेवन करते थे। पूर्व पंचायत समिति के उपाध्यक्ष नील चंद ठाकुर बताते हैं तिलमिल पानी के सेवन से पेट की बीमारियां खत्म हो जाती हैं। जब पांगी में कोई स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं थी कई लोग यहां आकर के बदहाजमी समेत कई रोगों के ईलाज के लिए तिलमिल पानी का प्रयोग करते थे। नब्बे के दशक में सीमा सड़क संगठन द्वारा किलाड़ सन्सारी सड़क निर्माण के कारण पानी का चश्मा काफी नीचे रहने के कारण लोगों का आना जाना कम हो गया है तथा भूस्खलन के कारण पानी का चश्मा लुप्त होने के कगार पर है। पांगी प्रशासन ने वर्ष 2009 में तिलमिल पानी के सौन्दर्यकरण करने के उद्देश्य से इसकी डीपीआर स्वीकृत करवा कर विधानसभा अध्यक्ष से इसका नींव का पत्थर भी रखवाया। तिलमिल पानी का सौन्दर्यकरण करके यहां पर मिनरल वाटर का प्लॉट लगाया जाता है तो इसकी मांग समस्त प्रदेश में रहेगी, पांगी के लोगों को रोजगार भी मिलेगा। ❖ **कृष्ण चंद राणा, किलाड़, पांगी**

आज का बड़ा प्रश्न क्या युद्ध सी स्थिति उत्पन्न कर समस्याओं का हल संभव है?

सैनिक होने के नाते मैं युद्ध के पक्ष में नहीं हूं। युद्ध का परिणाम विनाश अथवा सर्वनाश होता है। प्रथम विश्वयुद्ध हुआ द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ। इन दो विश्वयुद्धों से मानवजाति को क्या हासिल हुआ। विश्व की प्रगति रुक गई प्राकृतिक संपदा का विनाश हुआ जिसके लिए आज युद्ध में शामिल देश एक दूसरे से क्षमा मांग रहे हैं। लेकिन युद्ध चाहने वाले कभी माफी के हकदार नहीं हैं, न होंगे।

भारत की सीमाएं पड़ोसी देशों से सटी हुई हैं। यह विवाद सहमती से हल किया जा सकता है। सीमांकन कौन करे किस को मान्य होगा, यह प्रश्न है। इस समय हमारे महत्वपूर्ण पड़ोसी मुल्क है पाकिस्तान और चीन, जिससे हमारा पुराना सीमा विवाद है। चीन और पाकिस्तान ने हमारी प्रगति पर कभी प्रसन्नता प्रकट नहीं कि अपितु हमारे विकास कार्यों में रुकावटें ही पैदा की हैं। चीन ने हम पर आक्रमण किया पाकिस्तान ने हम पर दो घोषित युद्ध और एक अघोषित युद्ध थोपा।

चीन हमारी विदेश नीति से प्रसन्न नहीं है इसलिए एन.एस.जी की सदस्या हमें आज नहीं मिली लेकिन विश्व समर्थन से हम एक दिन एन.एस.जी के सदस्य बनेंगे। पाकिस्तान हमारे साथ पूरी शत्रुता निभा रहा है। जम्मू कश्मीर में कश्मीरी युवकों को बहला फुसला कर देशद्रोह करने को कह रहा है। यह साजिश इतनी खतरानाक है कि पाकिस्तान को यह कारनामें महंगे पड़ेंगे।

जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है इसमें दखलअन्दाजी कभी सहन नहीं होगी। सारा देश कश्मीरी भाइयों से कह रहा है कि दहशतगर्द पाकिस्तान की साजिशों से सजग रहे। कश्मीरियों का कश्मीर है। पाकिस्तानियों का नही। यह शब्द सुन तूं नापाक इरादों वालो। -

तूं कफन तैयार रख
शाजिशों के साथ तूं दफन होगा।
तेरे चेहरे से एक दिन हटेगा नकाब
तूं तो क्या, तेरा नामो निशान नहीं होगा ❖

गुरू गोबिंद सिंह जी का जीवन देता है समाज को जोड़ने की सीख

दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में श्री गुरू गोविंद सिंह जी के 350वें प्रकाश पर्व के समागम के अवसर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि देश को आगे बढ़ाने वालों में दशमेश गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज एक बड़ा कारण रहे हैं, इसलिए बच्चा-बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता है, उनके जैसा बनना चाहता है। यही कारण है भारत की पहचान विश्व में बताने वाले विवेकानंद जी ने कहा-''भारत के गौरव को पाने के लिए गुरू जी जैसा बनना होगा, जिसकी शुरूआत अपने से करनी होगी, तभी आदर्श समाज प्रस्तुत किया जा सकता है आदर्श देश बनाने के लिए स्वयं से शुरूआत करनी होगी, चाहे वो किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, जाति का हो।'' गुरू गोबिंद जी हमारे लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं और रहेंगे, वह ऐसे व्यक्तित्व रहे हैं, जिसने देश के लिए अपना सब कुछ दान कर दिया, चाहे राजपाठ हो, चाहे अपने खुद के सभी पुत्र हों और चाहे खुद ही क्यों न हों। विशेष समागम का आयोजन तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली में राष्ट्रीय सिक्ख संगत द्वारा 25 अक्तूबर को किया गया था।

गुरू गोबिंद सिंह जी का जीवन हमें समाज को जोड़ने की सीख देता है। हमें उनके चरित्र, वाणी और उपदेशों का अध्ययन करके कुछ न कुछ ग्रहण करना चाहिए। प्रयास करना चाहिए कि वह हमारे आचरण में आए। गुरू गोबिंद सिंह जी का जीवन ऐसा था कि आज के समय में केवल उनके स्मरण मात्र से पूरा जीवन प्रकाशमय हो जाएगा।

उन्होंने कहा कि गुरू गोबिंद सिंह जी ने कभी अपने विरोधियों के लिए भी अपशब्द का उपयोग नहीं किया। युद्ध के दौरान भी वह किसी प्रकार का भेद नहीं करते थे। गुरू जी ने ऐसे लोगों को खड़ा किया जो देश पर मर मिटने के लिए सदैव तत्पर रहते आए हैं। उनके दिए आदर्श किसी जाति, पंथ, सम्प्रदाय तक सीमित नहीं हैं, सभी के लिए हमें उनके चरित्र का अध्ययन करना होगा और उसका अधिक से अधिक प्रकाश अपने जीवन में उतारना होगा, यही हमारी उनके प्रति सच्ची कृतज्ञता होगी। हमें सिर्फ 350वें प्रकाश वर्ष तक ही नहीं रूकना होगा, इससे भी आगे निरंतर चलते रहना होगा। राष्ट्रीय सिक्ख संगत के अध्यक्ष जी।एस। गिल ने कहा कि विदेशी आक्रान्ताओं के आगे गुरू गोबिंद सिंह जी कभी झुके नहीं।

उन्होंने देश की अस्मिता के लिए मरना सिखाया, देश पर आए संकट को अपने ऊपर लेकर समाज को एक नई दिशा दिखाई, जिस पर देश का हर नागरिक आज भी चलने की कोशिश करता आ रहा है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत की संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। कई झटकों को झेलने के बाद भी हमारी संस्कृति बरकरार है। गुरू जी ने जिस पंथ की स्थापना की, वह आज भी देश की रक्षा कर रहा है। कार्यक्रम में नामधारी समाज से ठाकुर दिलीप सिंह एवं अन्य गणमान्य भी उपस्थित रहे। ❖

मुस्लिम तीर्थ सऊदी में योग की जय जय

इस्लाम को जन्म देने वाली भूमि, मुसलमानों की उद्गम भूमि सऊदी अरब ने शुद्ध वैदिक, सनातनी व हिंदू अवधारणा कंसेप्ट योग को एक खेल के रूप में मान्यता दे दी है। विश्वगुरु रहे भारत व हिंदुत्व हेतु यह एक छोटी सी घटना है किंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य के भारतीय सामजिक ताने बाने हेतु यह एक अनुकरणीय दृष्टांत है। एक आधिकारिक शासकीय घोषणा में सऊदी अरब ने न केवल योग को एक खेल के रूप में मान्यता दी है बल्कि योग को शरीर विज्ञान का अद्भुत ज्ञान पुंज बताते हुए इसकी महिमा भी वर्णित की है। सऊदी के इस आदेश के तहत अब सऊदी अरब में योग के शिक्षण प्रशिक्षण, प्रचार, योग शिविर लगाने व इसके मेडिकल व्यावसायिक स्वरूप को भी मान्यता दे दी है। जब उधर इस्लाम के तीर्थ में योग के प्रसंशा गीत और स्वीकार्यता के आदेश लिखे जा रहे थे तब इधर भारत में भारतीय मुस्लिम झारखंड में योग की लानत मलामत कर रहे थे। झारखांड की राजधानी रांची में मुस्लिम समुदाय के लोग एक मुस्लिम लड़की राफिया नाज और उसकी मासूम बेटी के खून के प्यासे हो गए थे क्योंकि वह योग सिखा रही थी। राफिया के योग करने और बच्चों को योग सिखाने से चिढ़े मुस्लिम युवाओं के एक समूह ने राफिया नाज और उसकी बेटी को बलात्कार और कत्ल की धमकी देते हुए योग बंद करने का फतवा दे दिया।

विशुद्ध इस्लामिक देश सऊदी अरब में योग को एक खेल के तौर पर अधिकारिक मान्यता दे दी है, और अब वहां लाइसेंस लेकर योग सिखाया जा सकेगा। नोफ मारवाई नामक एक महिला ने ही सऊदी अरब में अभियान चलाकर योग को मान्यता दिलाई है। नोफ मरवाई को ही सऊदी अरब की पहली योग प्रशिक्षक का दर्जा भी मिल गया है। प्रश्न यह है कि जब इस्लाम के जन्म की धारती सऊदी अरब सहित कई मुस्लिम देश योग को अपना रहें हैं तो फिर भारतीय मुल्ला, मौलवियों और फतवेबाजों को योग से क्या आपत्ति है?! स्पष्ट है कि यह आपत्ति योग से नहीं बल्कि भारतीयता से है। यह भी स्पष्ट है कि भारतीय मुस्लिम समाज के तथाकथित नेता भारत के इस्लाम को तनिक सा भी प्रगतिशील, शिक्षित व सुसंस्कृत होते हुये नहीं देखना चाहता। तभी तो सऊदी अरब में योग की स्वीकार्यता के सच को झुठलाते हुए, सच से मुंह छुपाते हुए और कुतर्क करते हुए देवबंद के उलेमा का कहना है कि सऊदी हुकूमत ने स्कूलों में वर्जिश को अनिवार्य किया है। इसलिए वहां की हुकूमत उसे कभी लागू नहीं कर सकती। फतवा ऑनलाइन के चेयरमैन मौलाना मुफ्ती अरशद फारूकी भी भारत में अनावश्यक वितंडा फैला रहे हैं और बेसुरा, जहरीला व साम्प्रदायिक राग आलाप रहे हैं कि सऊदी अरब के स्कूलों में किसी चीज को अनिवार्य किया गया है वो योग नहीं बल्कि वर्जिश है और शरीयत के लिहाज से योग शिर्क वर्जित है। सऊदी अरब के ज्वलंत सच को झुठलाते हुए उन्होंने कहा कि वर्जिश सही है, लेकिन योग इस्लामी नुकते नजर से गलत है, दुनिया के नक्शे में वो जो तब्दीलियां कर रहे हैं जरूरी नहीं की हम भी उन्हें माने। हम सिर्फ शरीयत को मानते और उसी पर चलते हैं, और शरीयत में योग की कोई गुंजाइश नहीं है।

भारत में कट्टरपंथी मुस्लिमों द्वारा भारतीय मूल्यों से हद दर्जे की घृणा करने और समाज में धार्मिक उन्माद का जहर फैलाने का यह कोई प्रथम अवसर नहीं है। कट्टरपंथी, धर्मान्ध और घोर हिंदू विरोधी मुस्लिम तत्व ऐसा अक्सर करते रहते हैं। ऐसा हर बार होता है कि भारतीय मुस्लिमों द्वारा, भारत की प्राचीनता, संस्कृति, धर्म व परम्पराओं से उपजी किसी भी बात को, कुतर्कों के आधार पर अनावश्यक ही शरीयत विरोधी सिद्ध कर दिया जाता है। आज परम आवश्यकता इस बात की हो गई है कि भारत का पढ़ा लिखा, सभ्य, प्रगतिशील मुस्लिम वर्ग इस बात को समझें व इन कटटरपंथी, तर्कहीन, अशिक्षित, लठमार मुसलमानों से स्वयं को अलग करके भारत में एक नई इबारत लिखने हेतु आगे बढ़े। भारतीय मुस्लिमों के शिक्षित वर्ग को योग ही नहीं बल्कि हर विषय में, इन कट्टरपंथियों से यह

बात पूछनी चाहिए कि उन्हें योग से घृणा है या भारतीय संस्कृति से? आज सऊदी अरब ने विशुद्ध वैदिक विचार, योग को स्वीकार्यता देकर भारतीय मुस्लिमों के समक्ष एक सकारात्मक पहल प्रस्तुत कर दी है। अब भारतीय मुस्लिम कट्टरपंथियों के फतवों व उन्मादित बातों में न आयें व योग को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार कर प्रेम, सौहार्द व सद्भाव का एक उदाहरण प्रस्तुत करें। आज जब योग को सम्पूर्ण विश्व स्वीकार कर चुका है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा धरती के सबसे लम्बे व दीर्घ दिन 21 जून को विश्व योग दिवस की मान्यता मिल चुकी है, तब भारतीय मुस्लिमों द्वारा योग का विरोध करना कुएं के मेंढक बने रहने जैसा ही कहलायेगा और उनके घोर धर्मांध होनें व धर्म के नाम पर अनावश्यक ही हर भारतीय विचार के विरोधी होने की एक ज्वलंत प्रतीक घटना भी बन जायेगी।

भारतीय मुस्लिम जगत में योग को लेकर तब ही विरोध के स्वर सामने आ गये थे जब पहली बार विश्व भर मे 21 जून 2015 को योग दिवस प्रतिष्ठा पूर्वक मनाया गया था। भारतीय मुस्लिम योग के धार्मिक न होने के तथ्य को नरेन्द्र मोदी के उस कथन से भी समझ सकते हैं जो उन्होंने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण में कहा था कि –''योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है यह मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह योग केवल व्यायाम के बारे में नहीं है, अपितु अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है।''

मोदी के इस कथन के बाद 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र में 193 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली थी। भारत के इस योग के प्रस्ताव को विश्व समुदाय ने मात्र 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया, जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। आज विश्व के 177 देशों में योग को वैधानिक मान्यता मिली हुई है।

आशा है योग की अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता, योग के आयुर्वेज्ञानिक महत्त्व, इसकी सहज, निःशुल्क उपलब्धता व महातम्य को देखते हुए भारतीय मुस्लिमों में से ही शिक्षित मुस्लिमों का एक बड़ा वर्ग योग को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार करके इस्लाम को प्रगतिवाद के मार्ग पर अग्रसर करेगा। ❖

एक बार दागने के बाद ब्रह्मोस को नहीं रोक पाएगी दुनिया की कोई ताकत

22 नवंबर को ब्रह्मोस मिसाइल का सफल परीक्षण करके भारत ने एक और नया मुकाम हासिल कर लिया है। ऐसा इसलिए क्योंकि इस दिन भारत ने दूसरी बार सुखोई-30 एमकेआइ सुपरसोनिक लड़ाकू विमान से इस मिसाइल का सफल प्रक्षेपण किया है। वर्तमान समय में इस मिसाइल को थल जल एवं आसमान में कहीं से भी छोड़ा जा सकता है। यह मिसाइल जमीन के नीचे परमाणु बंकरों कमांड एंड कंट्रोल सेंटर्स और समुद्र के ऊपर उड़ान भर रहे लड़ाकू विमानों को निशाना बनाने में सक्षम है। सुखोई-30 एमकेआइ के साथ जोड़कर ब्रह्मोस का पहली बार परीक्षण 25 जून 2016 को किया गया था। यह परीक्षण हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड यानी एचएएल के हवाई अड्डे पर किया गया था। तब 2500 किलोग्राम वजन के प्रक्षेपास्त्र के साथ उड़ान भरने वाला भारत पहला देश बन गया था। वह विमानन इतिहास में एक यादगार दिन था। अब इस नई सफलता के बाद सुखोई विमानों में ब्रह्मोस मिसाइलों को लगा दिया जाएगा जिससे वायु सेना की मारक क्षमता काफी बढ़ जाएगी। इस परीक्षण का उद्देश्य सुखोई के जरिये हवा से जमीन पर मार करने में सक्षम बनना था। वर्तमान समय में इस मिसाइल को थल, जल एवं आसमान में कहीं से भी छोड़ा जा सकता है।

अब भारतीय वायु सेना पूरी दुनिया की अकेली ऐसी वायु सेना बन गई है जिसके पास सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल प्रणाली है। अब वायु सेना दृश्यता सीमा से बाहर के लक्ष्यों पर भी हमला कर सकेगी। लगभग 40 विमानों में यह प्रणाली लगाए जाने की योजना है। इस कामयाबी के बाद भारत दुनिया में स्वयं को एक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में भी सफल हुआ है। भारत इस मिसाइल के निर्यात की दिशा में आगे बढ़ने की तैयारी में लग गया है। एमटीसीआर का सदस्य बनने के बाद यह कार्य और आसान हो गया है। वियतनाम 2011 से इस तेज गति की मिसाइल को खरीदने की कोशिश में लगा हुआ है। वह चीन से बचाव के लिए ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल सिस्टम लेना चाहता है।

❖ **साभार दैनिक जागरण**

विदेश नीति पर दृढ़ इच्छाशक्ति से देश हुआ मजबूत

शिमला (वि.स.कें.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं संघ के मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय संयोजक इंद्रेश कुमार ने कहा कि विदेश नीति पर दृढ़ इच्छाशक्ति से देश मजबूत हुआ है। उन्होंने कहा कि देश को जोड़ने में हमारे देश के देशभक्तों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसकी बदौलत हम आज अखंड भारत का स्वप्न पूरा कर पाये। उन्होंने देश के विभाजन पर दुख प्रकट करते हुए कहा कि देश का दुर्भाग्य है कि पंडित जवाहर लाल नेहरू इस देश के विभाजन के लिए जिम्मेवार रहे हैं। उनका कहना था कि यदि वे चाहते तो देश को दो भागों में नहीं बांटा जाता। उन्होंने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारतवर्ष को जोड़ने में अहम भूमिका निभाई। उन्होनें दोनों नेताओं की देश के प्रति रही सोच को सबके सामने रखा। उन्होंने वल्लभ भाई की देश को जोड़ने में निभाई गयी भूमिका की भी सराहना की।

इंद्रेश कुमार ज्वालामुखी में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच द्वारा आयोजित प्रादेशिक सम्मेलन में बतौर मुख्य वक्ता सम्मिलित रहे। उन्होंने चीन के प्रति सरकार की दृढ़नीति का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार डोकलाम मुद्दे पर नहीं झुकी यही कारण है कि चीन को सरकार के सामने घुटने टेकने पड़े। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम उपर ले जाने के लिए सराहनीय प्रयास किये हैं जिसमें वह पूरी तरह से सफल रहे हैं। यही कारण है कि आज विश्वभर में भारत की ख्याति अपने शिखर पर है। उन्होंने चीन मुद्दे पर विश्व द्वारा भारत का साथ देने के लिए सरकार की सफल विदेश नीति का हाथ बताया। उन्होंने कहा कि सशक्त राष्ट्र की यही पहचान है कि अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दे। उन्होंने चीन में बनी वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि अगर आप अपने देश से प्रेम करते हैं तो आपको विदेशी वस्तुओं का कम से कम उपयोग करना चाहिए। इतना ही नहीं अपने देश में बनी वस्तुओं का प्रयोग करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इससे राष्ट्र मजबूत होगा साथ ही यहां के लोगों को रोजगार मिलेगा अपना देश सशक्त राष्ट्रों की पंक्ति में अग्रणी रूप से शामिल होगा। सम्मेलन में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रदेश संयोजक के.डी. हिमाचली, सह संयोजक गुलजार मोहम्मद, परवेज अख्तर, मजीद मोहम्मद, विश्व हिंदू परिषद् के डॉ. राजीव कुंडू, संघ के दीपक कुमार एवं डॉ. नीलेश सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। ❖

महान सांसद के तौर पर हमेशा याद किए जाएंगे कुशोक बकुला- सुमित्रा महाजन

राजधानी दिल्ली के मावलंकर हाल में 19 वें कुशोक बकुला रिम्पोछे लोबजंग थुबतन छोगनोर के जन्मशती वर्ष का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि हिमालयी संस्कृति संरक्षण सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लामा छोसफेल जोत्पा, जूनागढ़ अखाड़े के पीठाधीश्वर अवधेशानंद गिरि जी महाराज तथा समारोह की अध्यक्षता लोकसभा की अध्यक्षा सुमित्रा महाजन ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री ने किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने कहा कि कुशोक बकुला जैसे महापुरुषों के कर्तृत्व से दुनिया को परिचित कराने की जरूरत है। सुमित्रा महाजन ने कुशोक बकुला के संसदीय कार्यकाल को याद करते हुए कहा कि लद्दाख की समस्याओं को उन्होंने हमेशा संसद में उठाया। लोकसभा अधयक्ष ने कहा कि वो दुनिया भर में जहां जहां गईं वहां वहां बौद्ध धर्म के विचार और कुशोक बकुला के किए गए काम नजर आए। उन्होंने कहा कि मंगोलिया के राजदूत रहते कुशोक बकुला वहां के गांव गांव घूमे, जिससे वहां शांति स्थापित हो सकी। कुशोक बकुला मंगोलिया में आंदोलनकारियों को अहिंसा के मार्ग पर लेकर आए। संसद में कुशोक बकुला का कृतित्व आज भी सांसदों को महान काम के लिए प्रेरित करता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सहसरकार्यवाह सुरेश सोनी ने कहा कि 19 वें कुशोक बकुला ने महान कार्य किए लेकिन वो देशभर में उतने लोकप्रिय नहीं हुए जितने होने चाहिए । कुशोक बकुला ना केवल लद्दाख बल्कि पूरे भारत के महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं। सुरेश सोनी ने कहा कि कुशोक बकुला ने अलगाववादियों के बीच राष्ट्र की एकता-अखंडता को मजबूत करने का काम किया। सोनी ने कुशोक बकुला के चर्चित भाषणों के वक्तव्य भी सुनाए। जिसमें उन्होंने जीवनभर जम्मू कश्मीर लद्दाख में राष्ट्रीय एकता के लिए काम किया। उन्होंने कहा कि महापुरुषों को जाति और क्षेत्र विशेष के चश्मे से देखा जाने लगा है। दुनियाभर में बढ़ रहे आतंकवाद के बीच कुशोक बकुला के विचारों पर चलना ज्यादा जरूरी हो गया है।

वहीं समारोह के विशिष्ट अतिथि और हिमालयी संस्कृति संरक्षण सभा के राष्ट्रीय अधयक्ष लामा छोसफेल जोत्पा ने कहा कि 19 वें कुशोक बकुला करुणा और दया की प्रतिमूर्ति थे। पूरी दुनिया में शांति प्रेम और भाईचारा स्थापित करने के लिए वो हमेशा याद किए जाते हैं। लामा जोत्पा ने कहा कि कुशोक बकुला ने पर्यावरण और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है।

जन्मशताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष और पूर्व विदेश सचिव शशांक ने बताया कि कुशोक बगुला के जन्मशती के उपलक्ष्य में देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

आए हुए अतिथियों का आभार जम्मू-कश्मीर स्टडी सेंटर के राष्ट्रीय अधयक्ष वरिष्ठ पत्रकार जवाहर लाल कौल ने जताया। इस मौके पर जवाहर लाल कौल ने कहा कि आचार्य अभिनव गुप्त की तरह कुशोक बकुला के काम से दुनिया को परिचय कराने की जरूरत है। कार्यक्रम का आयोजन कुशोक बकुला रिम्पोछे जन्मशताब्दी समारोह समिति और जम्मू-कश्मीर स्टडी सेंटर की तरफ से किया गया। ❖

पृष्ठ 12 का शेष...

समाजसेवा के उच्च आदर्शों पर चल रहा है परिवार

विशाल का परिवार समाजसेवा के उच्च आदर्शो पर चल रहा है। उनके दादा स्वर्गीय रामलाल शर्मा ने अपने अध्यापन काल में देखा कि ऐसे बहुत से छात्र हैं जो धन के अभाव में अपनी शिक्षा को पूरा नहीं कर पाते हैं। यही कारण रहा कि उनकी स्मृति में रामलाल एजुकेशन ट्रस्ट गेहड़वीं की स्थापना की गयी। जिसमें प्रतिभावान परंतु धन से अभावग्रस्त लोगों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इस ट्रस्ट में सेवानिवृत अधिकारी और कई प्रबुद्ध लोग जुड़े हैं। इनके पिता रमेश शर्मा का कहना है कि विशाल के दादा रामलाल शिक्षक थे उन्होंने अनेक साधनाविहीन लोगों को देखा जिनके बच्चों में अपूर्व प्रतिभा थी मगर वक्त के थपेड़ों में वह अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाये। इस कारण अक्सर वह अपनी सहायता के लिए योजनायें बनाया करते थे। आगे चलकर उनके परिवार ने उनकी यह कामना ट्रस्ट बनाकर पूरी कर दी। ❖

आतंक की निकली हवा

-मुकेश विग

पूरे भारत ने झूमकर खूब मनाई दीवाली
वीर जवानों ने जब दुश्मन की रीढ़ तोड़ डाली
मोदी-सेना को बधाई हर चेहरे पर छाई लाली
आर्तकियों के घर घुसकर, हवा उनकी निकाली।
हैरान परेशान है आर्तकियों के दुष्ट आका
जैसे अचानक पड़ा हो घर में किसी के डाका।
अभी तक हैं कोमा में, बहकी बहकी करें बातें
दुष्ट कहां मानते हैं पड़े न जब तक लातें।
सबूत मांगने वालो, कुछ तो करो शर्म
करतूतें तुम्हारी बताती नहीं कोई जात धर्म।
मां से मां होने का, नहीं मांगता कोई सबूत
हरकत जो ऐसी करे, नहीं उससे बड़ा कपूत।
नमक खाते भारत का, क्यों दिल है पाकिस्तानी
जनता जाग उठी तो, करा देगी याद नानी।
मूर्खों सी भाषा बंद करो, एकजुट हो जाओ
देशद्रोही बयानों से जाहिल काफिर न कहलाओ
तिरगां वतन सेना इन्हीं से अपनी शान है
नहीं चुका सकते कर्ज इनका, ये इतने महान हैं।
बचे आतंकियों को भी, ऐसे ही करना हलाल
'विग' फिर हम मनाएंगे, झूम झूम कर नया साल।

-सोलन, हि.प्र.

'माहणु'

-सुषमा देवी

छैल,सुचड़ी, जिंदड़ी पाईओ माहणु,
लियाकतां पेया, गवांदा माहणु,
मस्ती धमाल, मचांदा माहणु,
रोज़- धयाड़े, पठंग वणांदा माहणु,
पुठ्ठे कम्म, कमांदा माहणु,
अप्पीयो खरा, गलांदा माहणु,
अपणे च, इतना खोई रेया
अप्पी भगवान, बणी बैन्दा माहणु,
पैसे पिच्छे, पागल ओया
अपणी पछाण, गवांदा माहणु,
निक्कियां-निक्कियां, गलां पिच्छे।
बखेड़े पेया, पोआंदा माहणु,
डिग्गी गेया, अपणे कर्मां पिच्छे
कुकर्मा विच, दस्सेया माहणु,
रिश्ते- नाते करीते, चकणांचूर
ओच्छे कम्म, कमांदा माहणु,
माहणु, दे बाके चलेओ
लाणसण पैया, लांदा माहणु,
रब्ब देखी पछतांदा, ऐदे कम्म कमांदा माहणु।

- भरमाड़, ज्वाली, कॉगड़ा, हि.प्र.

विटप - पादप

-रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

विटप-पादप जीवन आधार,
करो तुम भी इनसे प्यार।
वेद-पुराण करते बखान,
बताते इन्हें बड़ा महान्।
मनन-चिन्तन साधक करते,
कन्द-मूलों से पेट भरते।
पर्यावरण को शुद्ध बनाएं,
भूमि-कटाव से ये बचाएं।
वृक्ष-पूजा है रीत पुरानी,
हम सब को अवश्य निभानी।
वृक्षारोपण काम भला है,
मानव इससे क्यों टला है?
करो न इन पर निर्मम प्रहार,
सुनो इनकी करूण पुकार।
गिरि-वन रहें नित हरे-भरे,
पशुधन सदा इनमें चरे।
प्राणवायु का न प्रभाव रहे,
ऐसी वाणी तो वेद कहे।
'प्रसाद' विटप समृद्धि-दाता,
इनसे यह संसार सोहाता।

सिहाल (कांगड़ा) हि.प्र।

जैविक खेती

जैविक खेती क्या है?

खेती की वह विधि जिसमें रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के बिना या कम प्रयोग से फसलों का उत्पादन किया जाता है, जैविक खेती कहलाती है। इसका अहम उद्देश्य मिट्टी की उर्वरक शक्ति बनाए रखने के साथ साथ फसलों का उत्पादन बढ़ानाप है।

जैविक खेती के उद्देश्यः

- जैविक खेती का मुख्य उद्देश्य यही है कि मिट्टी की उर्वरक खेती को नष्ट होने से बचाया जाए और खाने की चीजों जिनका उपयोग हम रोज करते है, उनमें रासायनिक चीजों के इस्तेमाल को रोका जाए।
- फसलों को ऐसे पोषक तत्व उपलब्ध कराना जो कि मृदा और फसलों में अघुलनशील हो और सूक्ष्म जीवों पर असरदायक हो।
- जैविक नाइट्रोजन का उपयोग करने और जैविक खाद और कार्बनिक पदार्थो द्वारा रिसाइक्लिंग करना।
- खरपतवार, फसलों में होने वाले रोंगों और कीट के नाश के लिए होने वाले दवाईयों के छिड़काओं को रोकना ताकि ये स्वास्थ्य को नुकसान ना पहुंचा सके।

- जैविक खेती में फसलों के साथ साथ पशुओं की देखभाल, जिसमें उनका आवास रखरखाव, उनका खानपान आदि शामिल है, इनका भी ध्यान रखा जाता है।
- जैविक खेती का सबसे अच्छा मुख्य उद्देश्य इसके वातावरण पर प्रभाव को सुरक्षित करना साथ ही साथ जंगली जानवरों की सुरक्षा और प्राकृतिक जीवन को सुरक्षित करना है।

जैविक खेती से होने वाले लाभः-

खेती में सबसे महत्वपूर्ण दो चीजें हैंपहला किसान दूसरा किसान की जमीन और जैविक खेती अपनाने से इन दोनों को ही काफी लाभ है जैविक खेती से किसान और उसकी जमीन को होने वाले लाभः-

- जैविक खेती अपनाने से भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ़ती है साथ ही साथ फसलों के लिए की जाने वाली सिंचाई के अंतराल में भी वृद्धि होती है।
- अगर किसान खेती में रसायनिक खाद का प्रयोग नहीं करता और जैविक खाद का उपयोग करता है तो उसकी फसल के लिए लगने वाली लागत भी कम होती है।
- किसान की फसलों का उत्पादन बढ़ता है जिससे उसे लाभ भी ज्यादा होता है।
- जैविक खाद के उपयोग से भूमि की गुणवत्ता में भी सुधार आता है।
- इस विधि के प्रयोग से भूमि के जलसम्भरण की क्षमता बढ़ती है और पानी के वाष्पीकरण में भी काम आती हैं

जैविक खेती शुरू कैसे करें?

जाहिर है छोटा किसान, जो खेती पर ही पूरी तरह निर्भर है, एकदम से पूरी तरह कुदरती खेती नहीं अपना सकता वह रोजी रोटी का खतरा मोल नहीं ले सकता परन्तु यदि हमें यह विश्वास है कि अगर पैदावार घटी भी तो 2-3 साल में वापिस बढ़ेगी और मौजूदा रास्ते पर चलना खतरनाक है, तो इस शुरूआती जोखिम को हम आगे के लिये निवेश समझ सकते हैं इसलिए हम अपनी जमीन के उतने हिस्से-आधा एकड़ या एक दो एकड़ से शुरू कर सकते हैं जितने की थोड़े समय के लिये आमदनी घटने का खतरा हम उठा सकते हैं, अपने खेत के इतने हिस्से में तो पूरी तरह से रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग बंद कर दें परन्तु यह ध्यान रहे कि केवल यूरिया इत्यादि का प्रयोग बन्द करने से काम नहीं चलेगा। उस से तो उपज घटेगी ही हमें इस के साथ साथ कुदरती खेती के दूसरे सारे उपाय भी इस टुकड़े में करने होंगे इस के साथ साथ बाकी खेत में भी इन सारे उपायों में से जितने अपनाये जा सके वे हमें अपनाने चाहिये।

पड़ोसियों की बात छोड़िये अगर कोई किसान अपने खेत के एक हिस्से में कीटनाशकों का प्रयोग बंद करता है और बाकी हिस्से में कीटनाशकों व रासायनों का प्रयोग करता रहे तो भी उसे नुकसान नहीं होगा खेत के जिस हिस्से में कुदरती खेती अपनाई है एक और उस हिस्से में कीट बढ़ जायेगा और दूसरी ओर मिट्टी और पौधे की बढ़ी हुई ताकत के कारण कुदरती तरीके से उगाई उस फसल पर कीट का हमला कम होगा इसलिए इस डर से कि पड़ोसी के खेत से कीटों का हमला होगा शुरूआत करने से न डरे। ❖

डायबिटीज या मुधमेह से ऐसे करें खुद का बचाव

ये एक ऐसा रोग है जिसकी चपेट में आने के बाद व्यक्ति का इसके चंगुल से निकल पाना लगभग नामुमकिन ही होता है। क्योंकि यह लाइफस्टाइल से संबंधित रोग है। इसलिए अपने लाइफस्टाइल में सुधार कर डायबिटीज को मात दी जा सकती है। इसे कंट्रोल करने के लिए नियमित दिनचर्या और पोषणयुक्त आहार की जरूरत होती है। डायबिटीज होने का कारण असंयमित खानपान, मानसिक तनाव, मोटापा, व्यायाम आदि की कमी होना है।

आजकल जिस तरह प्रदूषण बढ़ रहा है यह डायबिटीज के रोगियों के लिए बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है। जी हां, डायबिटीज रोग में वायु प्रदूषण व रासायनिक प्रदूषण पीड़ित को काफी प्रभावित करती हैं। पिछले दिनों हुए एक शोध में भी इस बात पर मुहर लगी है। 13 यूरोपीय देशों के तीन लाख लोगों के बीच कराये गये अध्ययन में साफ हुआ है कि वायु प्रदूषण पांच माइक्रो ग्राम प्रति वर्ग मीटर बढ़ने पर मृत्युदर सात फीसद तक बढ़ जाती है। जिसके चलते वायु प्रदूषण 10 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर बढ़ने पर डायबिटीज के रोगियों की दिक्कतें बढ़ने लगती हैं।

क्यों होता है ऐसा

जब हवा में काफी प्रदूषण होता है तो सांस लेने पर कई छोटे कण सांस के माध्यम से मानव शरीर में घुस जाते हैं। जिसके चलते धमनी के अंदर की लेयर की कार्यप्रणाली धीरे-धीरे खराब होने लगती है। ऐसे में वहां से ऐसे पदार्थ निकलते हैं जिनके खून के जमने की संभावना रहती है। बहुत बारीक कण नर्वस सिस्टम तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करते हैं जिसका असर सीधे तौर पर सांस लेने पर पड़ता है।

ऐसे करें खुद का बचाव

डायबिटीज के रोगी को अपने खाने के समय का ध्यान रखना चाहिए। ताजे और संतुलित आहार लेने के साथ ही भोजन का एक नियमित समय भी होना चाहिए।

डायबिटीज से बचने के लिए नियमित एक्सरसाइज करें। इससे शरीर में इन्सुलिन की सही मात्रा बनी रहती है। डॉक्टर की सलाह पर आप अपने लिए एक्सरसाइज प्लान कर सकते हैं।

डायबिटीज होने पर चिकित्सक द्वारा बतायी गई दवाओं का सही समय पर सेवन करें। किसी समस्या के होने पर अपने डॉक्टर से परामर्श करें।

बीमार होने पर आपको डायबिटीज की दवाओं का सेवन बंद नहीं करना चाहिए। इसके साथ ही कोशिश करें कि आपकी खाने की दिनचर्या में कोई बदलाव न हो। लेकिन दवा बंद करने से पहले डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

डायबिटीज के रोगी को अल्कोहल का सेवन नहीं करना चाहिए। अल्कोहल के सेवन से शरीर में ब्लड शुगर लेवल कम हो जाता है। डायबिटीज में अल्कोहल से आंखों संबंधी परेशानी होने का खतरा भी रहता है।

यदि आप तनाव में हैं तो इससे आपकी दिनचर्या पर असर पड़ेगा। तनाव से आपके ब्लड शुगर लेवल पर भी असर पड़ सकता है। तनाव से छुटकारा पाने के लिए मेडिटेशन आदि का सहारा लें। ❖

लोक संस्कृति के पोषक एवं भाषाविद् डॉ० विद्याचन्द ठाकुर का जाना

मृदुभाषी, सरल हृदय, सादगी पसन्द, भाषाविद, संस्कृति कर्मी विद्वान डॉ0 विद्याचन्द ठाकुर के आकस्मिक निधन से प्रदेश के लेखक, साहित्यकार, कलाकार, संस्कृति कर्मियों को गहरा आघात लगना स्वाभाविक है। विश्वास ही नहीं हो रहा है कि वे आज हमारे बीच नहीं हैं।

13 जनवरी सन् 1953 को ज़िला कुल्लू की ग्राम पंचायत पीज के गांव खोड़ाहागे में स्व0 श्री उच्छवू राम और स्व श्रीमती लोतमी देवी की प्रथम संतान के रूप में जन्म लिया और 31 अक्तूबर 2017 को निर्वाण प्राप्त कर चुके डॉ0 विद्याचन्द ठाकुर बाल्यकाल से ही होनहार थे। पहली से लेकर स्नातकोत्तर तक प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते रहे। संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर करने के बाद उनका रुझान भाषा-बोली में रहा, इसलिए उन्होंने 'कुल्लुवी के संस्कृत मूलक शब्द एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' नामक विषय पर हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से पी.एच.डी. की उपाधि ग्रहण करके लोकभाषा के प्रति अपनी रूचि का परिचय दिया। सिरमौर, चम्बा, मण्डी, हमीरपुर में ज़िला भाषा अधिकारी रहते हुए उन्होंने इन ज़िलों के कलाकारों, साहित्यकारों, संस्कृति कर्मियों तथा लेखकों को लगातार प्रोत्साहित किया। बाद में इन्हें शब्दव्युत्पत्तिविद् के पद पर प्रोन्नत कर निदेशालय में रखा गया है।

भाषा विभाग से उपनिदेशक के पद से सेवानिवृत्ति के बाद भी डॉ0 विद्याचन्द ठाकुर लेखन में सक्रिय रहे और आजकल 'हिमाचल प्रदेश की सनातन परम्परा' पर पुस्तक लेखन के काम में जुटे हुए थे। स्व. ठाकुर जी लम्बे समय तक मातृवन्दना पत्रिका के परामर्शदाता एवं सम्पादक भी रहे। वर्ष प्रतिपदा विशेषांक हेतु वार्षिक कैलेंडर का प्रकाशन भी आपकी देख-रेख में होता रहा है। 1998 में कुल्लू में उनके मार्गदर्शन में भारतीय इतिहास संकलन समिति की ज़िला इकाई का गठन हुआ। आजकल वे स्व0 जगदेव चन्द शोध संस्थान नेरी में वैचारिक निदेशक और शोध संस्थान से निकलने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'इतिहास दिवाकर' के सम्पादक थे।

यद्यपि आज डॉ0 विद्याचन्द ठाकुर सशरीर हमारे बीच नहीं है, परन्तु उनकी राष्ट्रचिन्तन की भावधारा और उनके विचार हमेशा हमारे मध्य विद्यमान रहेंगे। ❖

एक कर्मठ एवं सेवाभावी कार्यकर्ता का अवसान

मण्डी जिला के सेवा प्रमुख श्री नवल किशोर मल्होत्रा का गत 16 नवम्बर को हृदय गति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया। वे 59 वर्ष के थे। उनका जन्म 2 जून 1958 को मण्डी में हुआ था। इन्होंने अम्बाला के पॉलिटैक्निक कॉलेज से सिविल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा किया था।

मनाली, कुल्लू, ददाहू, मण्डी, सुन्दरनगर, आदि स्थानों पर उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। दिनांक 16 नवम्बर 2017 को प्रौढ़ बैठक के समय गीत करवाया और बैठक समाप्त होने के बाद घर-घर जाकर मातृवन्दना बॉट रहे थे। राष्ट्रीय कार्य करते-2 इन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मण्डी जिला के जिला सेवा प्रमुख के नाते उनके पास दायित्व था। सेवा भारती मण्डी के कार्य में अग्रणी भूमिका निभाते रहे और सेवा भारती के छात्रावास विवेकानन्द बाड़ी गुमाणू में सेवा निवृति से पहले भी वे अपनी सेवा देते रहे। उन्होंने पूरा जीवन सामाजिक एवं सेवा कार्यों को समर्पित किया हुआ था।

उनकी दिनचर्या में अनेक तरह के सेवा कार्यो की प्राथमिकता रहती थी जैसे- शमशानघाट की सफाई करना, हॉस्पिटल के आस-पास की सफाई तथा कहीं पर भी कूड़ा-कचरा देखते ही झट से उसे उठा लेते थे।

स्व0 नवल मल्होत्रा जी राष्ट्रीय कार्य करते हुए हृदयगति रूकने से इस संसार से विदा हुए। स्व. मल्होत्रा जी 1 वर्ष 6 माह पहले ही एस.डी.ओ. के पद से सेवानिवृत हुए थे। सेवा भारती हि.प्र को उनके निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है। मातृवन्दना संस्थान उनके आकस्मिक निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त करता है तथा उनके परिवार को इस दु:ख की घड़ी को सहने की ईश्वर से प्रर्थना करता है। ❖

रानी पिंगला

रानी पिंगला वह सती हैं, जिसने अपने पति की शंका-समाधान के लिए योग-माया से अपना प्राणान्त कर लिया था। पति की आज्ञा को पूर्ण करना ही उसने अपना धर्म एवं कर्तव्य माना। बाद में, वह श्रद्धा-पात्र बनी। चंद्रावती के परमार वंशी अंतिम नरेश हूनन ने आखेट से लौटकर अपनी पत्नी रानी पिंगला को बतलाया कि उन्होंने एक छोटी जाति की ऐसी स्त्री को देखा, जो अपने पति की चिता पर हंसते-हंसते जलकर सती हो गई। सर्प के काटने से उसके पति की मृत्यु हुई थी। यह सुनकर रानी ने कह दिया सती नारी तो पति की मृत्यु का समाचार पाते ही प्राण छोड़ देती है। इस पर राजा ने व्यंग्य करते हुए कह दिया, 'ऐसी सती तो रानी पिंगला ही हो सकती है।' रानी समझ गई थी कि उसे किसी दिन अग्नि-परीक्षा देनी होगी।

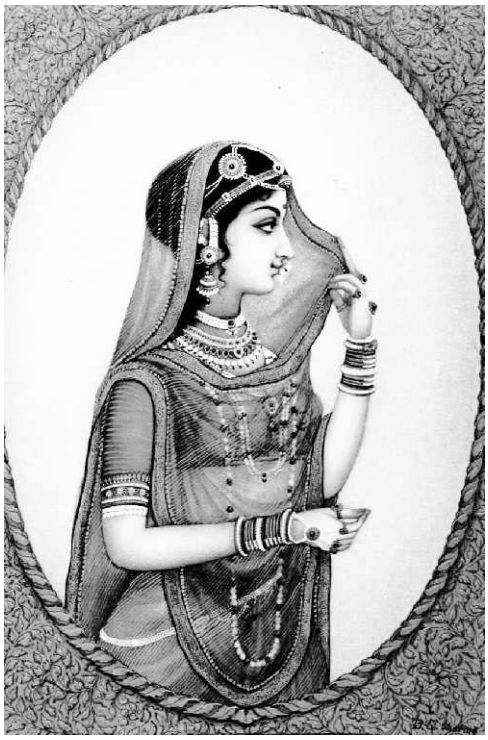

एक दिन रानी ने धर्मगुरू भगवान् दत्तात्रेय को अपने मन की शंका बताई। तब उन्होंने रानी को एक बीज देकर उसे आंगन में बोने के लिए कहा और बताया, 'यदि राजा जीवित होगा तो इस वृक्ष से जल की बूंदे गिरेंगी और यदि मर गया तो इसके पत्ते सूख कर नीचे गिर जाएंगे।' रानी ने उसे आंगन में बो कर सींचना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन राजा दस्युओं का विनाश करने के लिए राज्य से बाहर गया। उन्होंने रानी के सतीत्व की परीक्षा लेने की बात मन में सोची और यह सूचना भिजवा दी कि 'वे युद्ध में मारे गए हैं।' रानी ने उस वृक्ष से पूछा तो जल की बूंदे गिरने लगीं अर्थात् राजा जीवित है, किन्तु रानी ने अपनी परीक्षा जानकर, सती होने का निश्चय कर लिया। रानी पिंगला ने राजा के मुकुट को अपनी गोद में रखा और जलने के लिए आसन लगा लिया।

यह योगिनी थी। प्राण जब कंठ तक आ गए तो दूती ने समाचार दिया कि 'यह समाचार झूठा है।' लेकिन देर हो गई थी। तालू-मूल भेद कर ब्रह्म रंध्र से उनके प्राण निकल चुके थे। इधर महाराज को भी शक हो गया कि कहीं रानी प्राण न दे दे। लौटते समय उन्होंने देखा कि श्मशान में आग जल रही है। उसमें से चंदन की सुगंध आ रही है। शव-दाह हो रहा है। यह देखकर राजा विक्षिप्त हो गए। राजा पागलों की भांति श्मशान में रोते हुए घूमने लगा। परमसिद्ध गोरखनाथ जी ने राजा को इस हाल में देखा। अचानक उनके हाथ से मिट्टी की हंडिया गिरकर टूट गई और वे हाय-हाय करने लगे। राजा ने कहा कि, 'तुम इस दो कौड़ी कि हंडिया के लिए रो रहे हो? गोरखनाथ ने कहा कि 'मेरी हंडिया मिट्टी की थी, तो तेरी रानी क्या सोने की थी? मुझे और अच्छी हंडिया मिल सकती है तो क्या तुझे दूसरी स्त्री नहीं मिल सकती है? मेरी हंडिया जोड़ दे तो मैं तेरी रानी को जिंदा कर दूंगा।' राजा ने संत के पैर पकड़ लिए। संत ने एक चुटकी भस्म चिता पर फेंक दी और क्षणभर में एक भीड़ खड़ी हो गई।

राजा से पहचानने के लिए कहा कि 'कौन-सी है? चुन ले।' राजा उसे पहचानने में असमर्थ हो गया। तब संत ने ताली बजाई। तभी असली पिंगला आ गई। वह राजा के सामने खड़ी थी। सहसा राजा के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। वह संत के साथ वन में साधना करने चला गया। महात्मा राजा पर कृपा करने ही पधारे थे। वह रानी भी अदृश्य हो गई, क्योंकि वह माया-जनित थी। राजा का मोह-भंग हो गया था। ❖

शिक्षा, संस्कार और आनंद का केंद्र हैं कुटुंब-परिवार

-रवीन्द्र जोशी

हम सब जानते हैं कि हमारे भारत में कुटुंब-परिवार केवल आवश्यकता पूर्ति का केंद्र नहीं होते, बल्कि भावनाओं को दिशा देनेवाले, बुद्धि को आकार देनेवाले, जीवन मूल्यों का बीजारोपण करनेवाले केंद्र हैं। हमें यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि परिवार शिक्षा, संस्कार और आनंद के केंद्र हैं। इस लेख में दो परिवारों का जिक्र आएगा, जो हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत बन सकते हैं।इनसे हम आज की परिस्थितियों में परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरणका निर्माण करना सीख सकते हैं।इसके लिए सप्ताह में कम से कम एक दिन परिवार के सभी सदस्यों को एक साथ बैठकर भोजन करना चाहिए। बड़ों के प्रति सम्मान औरआपस में भाईचारे का निर्माण हो सके, इस प्रकार की चर्चा करनी चाहिए। हमारा आपस का प्यार बढ़ता रहे, किन्तु यह अपने परिवार तक सीमित न रहे, बल्कि अपने मुहल्ले और गांव का वातावरण बदलने में सहयोगी हो। प्रत्येक गृहस्थ को अपने परिवार के प्रति जिम्मेदारी निभाते समय रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अतिथि सत्कार, इन छः बातों का ध्यान भी अवश्य देना चाहिए।

महाराष्ट्र प्रवास के दौरान एक परिवार की दिनचर्या देखकर मन आनंद से भर गया। बारामती गांव के इस परिवार में माताजी, उनके दो पुत्र, दो पुत्र वधू एवं उनकी तीन कन्याएं सब एक साथ रहते हैं। सबकी सुबह पांच बजे ब्रह्म मुहूर्त में होती है। उसके बाद सभी टहलने जाते हैं। घर लौटने के बाद आम, अमरुद, तुलसी आदि के पत्तों की चाय बनाकर पीते हैं। घर के आसपास का वातावरण भी आनंदित करने वाला है। चारों ओर छोटे-बड़े पेड़ लगे हैं। पेड़ों पर रहने वाले पक्षी अपने कलरव से मधुर संगीतमय वातावरण का निर्माण करते हैं। यह परिवार इन पक्षियों को नित्य आधा किलो चावल पकाकर खिलाता है। यह उनकी परंपरा बन गई है।

इस परिवार से हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। वर्तमान में जहाँ एक ओर परिवार बिखर रहे हैं, उसी समय में यह परिवार मिल-जुल कर रहने का सन्देश देता है। घर की मातृशक्ति सबकी सेहत का ख्याल रखती हैं। दोनों समय रसोई में ताजा भोजन पका कर सबको खिलाया जाता है। रात्री में परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर आमोद-प्रमोद से गपशप करते हैं। घर की बेटियां पढ़ाई के साथ संगीत, चित्रकला, पुस्तक पढ़ने और ब्लॉग लेखन में रूचि लेती हैं। इस स्वस्थ दिनचर्या के कारण घर के लोग बीमार नहीं पड़ते। सदा आनंद बिखेरते रहते हैं।

इसी तरह, मराठवाड़ा के एक गांव का परिवार पूना शहर में रहता है। माता-पिता दोनों कमाई के लिए घर से बाहर जाते हैं। अपने परिवार को बड़ा करने और उसकी सुख-सुविधा के लिए आज की परिस्थितियों में माता-पिता दोनों को धन कमाने के लिए प्रयास करना मानो आवश्यक हो गया है। ऐसी परिस्थिति में परिवार में नयी पीढ़ी को संस्कार, स्नेह मिल सके, इसके लिए विशेष प्रयास करना बहुत जरूरी है। हालाँकि यह विशेष प्रयास बहुत आसान हैं। इस परिवार में बच्चों को संस्कार, शिक्षा, लाड-प्यार मिल सके, इसके लिए बच्चों के नानाजी हर महीने चार-पांच दिन के लिए गाँव से पूना आ जाते हैं। वह बच्चों के साथ रहते हैं। उन्हें अपने देश के महापुरुषों के जीवन की कहानियां सुनाते हैं। इससे उन बच्चों को सहज ही अपनी संस्कृति की जानकारी हो जाती है, उन्हें संस्कार प्राप्त हो जाते हैं और उनकी मेधा शक्ति सम) हो जाती है।

गुजरात प्रवास में मुझे एक सुंदर वाक्य पढ़ने को मिला-'ह्मे प्रसन्न रहो, नहीं तो तमारो डाक्टर प्रसन्न रहे छे।।' अर्थात् तुम प्रसन्न रहो, नहीं तो आपका डॉक्टर प्रसन्न रहेगा। इस बात को समझने से सबका जीवन सुखमय मंगलमय होगा, ऐसा विश्वास है। इसके लिए परिवार में आनंद का वातावरण बनाना जरूरी है। ❖

सहसंयोजक, अखिल भारतीय कुटुंब प्रबोधन

महारानी पद्मिनी का जौहर

महारानी पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन और रानी चम्पावती की पुत्री थी। पद्मिनी का विवाह चित्तौड़ के रावल रत्न सिंह के साथ हुआ था। पद्मिनी के सौन्दर्य और जौहर व्रत की कथा, मध्यकाल से लेकर वर्तमान काल तक चारणों, भाटों, कवियों, धर्म प्रचारकों और लोक-गायकों द्वारा विविध रूपों और आशयों में कही गई है। महारानी पद्मिनी की इस सुन्दरता का समाचार अब अलाउद्दीन के कान तक पहुंचा। तो वह पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो उठा। वीर राजपूतों के रहते युद्ध के बिना पद्मिनी का मिलना असम्भव था। इसलिए उसने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी, चित्तौड़ को चारों ओर से घेर लिया और महारावल के पास दूतों द्वारा संदेश भेजा कि बिना पद्मिनी के लिए दिल्ली न जाऊंगा।' दूत से संदेश सुनकर महारावल आग बबूला हो गए। भयंकर युद्ध होने लगा। अंत में पठान सेना के पैर उखड़ गए और युद्धस्थल छोड़कर भाग निकले। उलाउद्दीन को निराश खाली हाथ ही लौटना पड़ा।

कुछ समय पश्चात् अलाउद्दीन फिर एक बड़ी सेना लेकर चित्तौड़ पर आ धमका और केवल पद्मिनी को देखकर लौट जाने का संदेश भेजा। युद्ध को टालने के लिए इस शर्त को मान लिया गया। कहा जाता है कि दूर से दर्पण में पद्मिनी की छवि को दिखाया गया। पद्मिनी की सुन्दरता को देख अलाउद्दीन पागल हो उठा और अतिथि के नाते रावल जैसे ही उसे द्वार तक छोड़ने आए उन्हें बंदी बना लिया गया। अब अलाउद्दीन ने शर्त रखी कि जब तक महारानी पद्मिनी मेरे पास न आ जाएगी तब तक रावल नहीं छोड़े जाएंगे।'' इस समाचार ने चित्तौड़ में हलचल मचा डाली। परन्तु महारानी और स्वामी भक्त मंत्रियों ने सोचा कि इस समय नीति से ही काम लेना उचित है। इसीलिए उसी समय दूत को संदेश दे दिया कि महारानी अपनी सात सौ सहेलियों के साथ आ रही हैं। यह संदेश पाकर उलाउद्दीन बहुत आनन्दित हो उठा। नियत समय पर सात सौ डोलियां चित्तौड़ गढ़ से निकलकर उलाउद्दीन के खेमे में जा पहुंची। उन पालकियों को उठाने वाले और उनमें बैठने वाले सभी वीर राजपूत योद्धा थे। वहां पहुंचकर वीर बादल ने अलाउद्दीन से प्रार्थना की कि महारानी एक बार महारावल के दर्शन करना चाहती हैं। तुरन्त महारवल बंधनमुक्त कर दिए गए। अब रावल को बड़ी समझदारी के साथ बादल ने चित्तौड़ रवाना कर दिया और पालकी में आए सभी राजपूत वीर खिलजी सेना पर सिंहों की तरह टूट पड़े।

बादल के साथ भतीजे गोरा ने युद्ध कौशल दिखाया उससे घबराकर शाही सेना मैदान छोड़ भाग खड़ी हुई। पराजित खिलजी विवश होकर दिल्ली लौट आया किन्तु पद्मिनी को पाने की लालसा अब भी उसके हृदय में फांस की तरह चुभी हुई थी। उसने पुनः दोगुने उत्साह से चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। इस बार दुष्ट खिलजी बड़ी तैयारी के साथ आया था। छः मास तक राजपूत सेना बड़ी वीरता से लड़ती रही। परन्तु गढ़ में घिरे हुए राजपूत वीरों की संख्या इतनी घट चुकी थी कि

हार निश्चित थी। अब गढ़ के भीतर क्षत्राणियों ने चिता सजाई और पद्मिनी रानी 16000 क्षत्रणियों के साथ अग्नि में समा गई।

केसरिया बाना पहन जब राजपूतों ने देखा कि महारानी पद्मिनी सहित गढ़ की समस्त नारियों ने प्रसन्नता सहित अग्नि का वरण कर लिया है तो वे सिंह गर्जना करते हुए यवनों पर टूट पड़े। भीषण संग्राम हुआ और अलौकिक वीरता दिखाता प्रत्येक राजपूत वीरगति को प्राप्त हुआ। अलाउद्दीन पद्मिनी को पाने की लालसा में आनन्द मनाता हुआ किले में प्रविष्ट हुआ। मगर ये क्या? उसकी आंखे फटी की फटी रह गई! सारा नगर अग्नि स्नान में समा चुका था। वह शीघ्रता से राजप्रसाद में पहुंचा। महारानी पद्मिनी तो पहले ही जौहर की चिता में जलकर भस्म हो चुकी थी। इस सब को देखकर अलाउद्दीन को क्रोधवश चित्तौड़ के राजप्रसाद तथा देव मंदिरों को भंग करवाकर ही संतोष करना पड़ा। इतिहास में सन् 1303 का वह काला दिवस था जिसे महारानी पद्मिनी ने अपने अविस्मरणीय बलिदान से स्वर्णिम बना दिया।

संजय की लीला नहीं चलने वाली

संजय लीला भंसाली द्वारा पद्मावती पर बनाई गई फिल्म का करणी सेना द्वारा विरोध किया जा रहा है। इस दौर में पब्लिसिटी के लिए फिल्मकार किसी भी हद तक जाने से गुरेज नहीं करते। भंसाली अगर सचमुच इतिहास के साथ खिलवाड़ करते हुए सिनेमैटिक लिबर्टी के नाम पर कोई लव स्टोरी का प्रपंच रचना चाहते है तो वे कम गुनाहगार नहीं है। भंसाली का इतिहास ऐसा रहा है। देवदास में जो बंदा पारो और चंद्रमुखी का एक साथ डांस करा सकते हैं, जो बंदा फिल्म को रोचक बनाने के नाम पर बाजीराव मस्तानी में काशीबाई और मस्तानी को एक जगह इकट्ठा कर सकता है, अगर उसने पद्मावती में खिलजी और पद्मावती के प्रेम-प्रसंग को लेकर कुछ सोचा हो तो इसे अनहोनी नहीं कर सकते। ये कहा जा सकता है कि भंसाली आदत से मजबूर रहे हैं और लेकिन इस बार ये आदत उनको भारी पड़ी।

इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि लगभग 200 करोड़ के भारी भरकम बजट के साथ बन रही एक फिल्म को किसी एक सीन के नाम पर लगातार विरोध का सामना करना पड़ें । इस विवाद के लिए बड़ा दोषी कौन है, ये अलग सवाल हो जाता है, लेकिन इसमें दो राय नहीं है कि इस बवाल ने फिल्म को संकट में डाल दिया और यहां तक आशंका होने लगी कि शायद ये फिल्म कहीं डिब्बाबंद फिल्मों की लिस्ट में न जुड़ जाए। सवाल बहुत हैं और हर सवाल का जवाब 1 दिसंबर को मिलेगा, जब फिल्म परदे पर आएगी। शायद उसी दिन करणी सेना और भंसाली को अपने-अपने सवालों के जवाब मिल जाएंगे। पब्लिसिटी, प्रपंच और इतिहास से छेड़छाड़ से जुड़े हर सवाल के जवाब सामने आने में वक्त ज्यादा नहीं है। ❖

फिलीपींस की अखबारों में नमो-नमो

'माबुहय नरेंद्र मोदी, प्राइम मिनिस्टर ऑफ इंडिया' और 'लोग लिव प्राइम मिनिस्टर मोदी' के शीर्षक के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को फिलीपींस के अखबारों के विज्ञापनों में छाए रहे। एक अन्य शीर्षक में लिखा है कि फिलीपींस में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक प्रक्रिया प्रबंधन उद्योग श्री मोदी का हार्दिक स्वागत करता है एक अखबार में एक पृष्ठ के विज्ञापन में फेडरेशन ऑफ इंडियन चेंबर ऑफ कामर्स ऑफ फिलीपींस ने भी श्री मोदी का स्वागत किया। फेडरेशन ने बधाई संदेश में कहा कि भारत और फिलीपींस के इतिहास के इस विशेष मौके पर प्रधानमंत्री के यहां आगमन से हम सम्मानित और गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। फिक्की (फिलीपींस) की ओर से जारी विज्ञापन में कहा गया कि हमारा चेंबर फिलीपीनी व्यापार क्षेत्र को आगे बढ़ाने में अगवाई के लिए सक्षम है तथा दोनों देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार हैं। ❖

सात सालों से 39 सड़कों के निर्माण में सुस्त रफ्तार पर केंद्र ने मांग जवाब

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत हिमाचल में 39 सड़कों के निर्माण में सुस्त रफ्तार पर केंद्र ने फटकार लगाई है। इन सड़कों का निर्माण पिछले 7 सालों से लटका हुआ है। पर्याप्त बजट होने के बावजूद इन सड़कों का निर्माण कार्य पूरा नहीं किया गया है। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने इसको लेकर हिमाचल को फटकार लगाते हुए इन सड़कों की एक्शन टेकन रिपोर्ट (एटीआर) मांगी है, ताकि इनकी क्वालिटी मॉनिटरिंग करवाई जा सके। इसमें पूछा गया है कि क्या कोर्ट केस होने की वजह से निर्माण के लिए जो करार किया गया था, वो समाप्त हो गया है। इसकी विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर मांगी गई है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत केंद्र ने हिमाचल को 210 सड़कों और 11 पुलों का प्रोजेक्ट अप्रूव किया है। इन सड़कों पर करीब 782.21 करोड़ रूपए की रकम खर्च होगी। इनमें कुछ सड़कों को अपग्रेड किया जाएगा, जबकि कुछ नई सड़कों को क्लीयरेंस दी गई है। इन सड़कों पर हिमाचल सरकार का 84.37 करोड़ रूपए से ज्यादा शेयर बनेगा, जबकि केंद्र सरकार की ओर से इस 697.84 करोड़ से ज्यादा का शेयर रहेगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत वर्ष 2017-18 के बैच एक के लिए उक्त सड़कों को नई कोल्ड मिक्स तकनीक के तहत बनाया जाना है। ❖

प्लास्टिक कचरे से बनेगा बायो डीजल

प्लास्टिक कचरे से भी डीजल जैसी बहु उपयोगी चीज बनाई जा सकती है। सुनने में थोड़ा अजीब लगता है लेकिन इसे संभव कर दिखाया है प्रदेश के नन्हे वैज्ञानिक ने। यह आविष्कार किया है कुल्लू के बंजार स्थित ट्रिनटी स्कूल के आर्यन प्रभात ने। नवमी कक्षा के छात्र आर्यन प्रभात ने अपना यह मॉडल सोलन के नौणी वि.वि. में चल रहे सिल्वर जुबली राज्य स्तरीय साइंस कांग्रेस में प्रस्तुत किया है।

आर्यन प्रभात का कहना है कि हमारे आसपास बहुत सा प्लास्टिक वेस्ट फैला रहता है जिससे गंदगी फैलती है और पर्यावरण को भी हानि पहुंचती है। प्लास्टिक कई वर्षो तक सड़ता भी नहीं और कृषि भी इससे प्रभावित होती है। इसे देखते हुए प्रभात ने सोचा कि इस कचरे को कैसे काम में लाया जाए। काफी माथापच्ची करने के बाद उसका प्रयास सफल हो पाया। आर्यन ने एक मजबूत चैंबर में प्लास्टिक को गर्म करके इससे बायो डीजल प्राप्त किया। यही नहीं इससे प्राप्त बायो डीजल का प्रयोग उसने घर में पड़े स्टोव में किया ।

इसका प्रयोग सफल रहा और उसने मॉडल तैयार कर यहां इसका प्रदर्शन किया। आर्यन के अनुसार जब प्लास्टिक वेस्ट को किसी चैंबर में 400 डिग्री तक गर्म किया जाता है, तब इसमें से 60 से 62 फीसदी डीजल प्राप्त होता है । इसके अलावा इसमें से करीब 30 फीसदी एल.पी.जी.गैस, जिसे रसोई गैस के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है तथा 10 फीसदी पैरा वैक्स भी प्राप्त होता है, जिसका कई कामों में प्रयोग होता है। करीब .2 फीसदी काब्न रेजीड्यू बचता है जिसका प्रयोग स्याही बनाने में किया जा सकता है। इस मॉडल के लिए आर्यन ने गैस सिलेंडर, मजबूत चैंबर, नली, मिट्टी, गोबर व बोतल आदि का प्रयोग किया है। आर्यन के पिता शीश प्रभात बिजनैसमैन हैं और मां डोलमा प्रभात गृहिणी हैं। आर्यन का सपना भविष्य में खूब पढ़ाई करके आई.आई.टी. इंजीनियर बनकर देश सेवा करने का है। ❖

महिलाओं को आत्म सम्मान की रक्षा में उठाने होंगे शस्त्रा : मोनिका अरोड़ा

'उठो द्रौपदी शस्त्र उठा लो' कविता के इस वाक्य को दोहराते हुए गुड़िया कांड पर भावुक होते हुए सर्वोच्च न्यायालय की अधिवक्ता मोनिका अरोड़ा ने कहा कि जब रक्षक ही भक्षक हो जायें तो आत्म सम्मान की रक्षा के लिए महिलाओं को शस्त्र उठाने ही होंगे। सोमवार को संविधान दिवस पर हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय शिमला में अधिवक्ता परिषद् द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश उच्च न्यायालय के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश श्री संजय करोल एवं मुख्य वक्ता सर्वाच्च न्यायालय की वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीमती मोनिका अरोड़ा उपस्थित रहीं। मोनिका अरोड़ा ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत का इतिहास बहुत गरिमापूर्ण रहा है इसे भारत के लोगों को किसी फिल्म को देखकर तय नहीं करना चाहिए। भारत के बारे में जोधाबाई या पद्मावती फिल्में देखकर इसकी गरिमा को नहीं समझा जा सकता। भारत में वीरांगनाओं की एक लंबी फेहरिस्त रही है जिन्होंने भारत के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उन्होंने संविधान में महिलाओं की स्थिति के बारे में कहा कि संविधान का निर्माण हुआ तो उस समय भारत में सदियों पुरानी दकियानूसी परम्पराएं विद्यमान थीं जिसको मानकर महिलाओं को अधिकार प्रदान करने में मुश्किलें रही हैं। उन्होंने बताया कि मुगलों के आने के बाद भारत में महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया और उनके अधिकारों का हनन हुआ। उन्होंने तीन तलाक पर उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि महिलायें अब जागरूक हो गयी हैं और वह बहुपत्नी और हलाला जैसी कुप्रथाओं के विरूद्ध भी जमकर आवाज बुलंद कर रही हैं। उन्होंने भारतीय प्राचीन संदर्भों से महिलाओं के उच्च सम्मान का जिक्र किया।

उन्होंने कहा कि पहले के समय में ज्ञान का प्रभार सरस्वती, गृह प्रभार लक्ष्मी और रक्षा का प्रभार काली माता ही संभालती थी और महिला और पुरूष में कोई भेदभाव नहीं होता था। मुख्य अतिथि एवं उच्च न्यायालय के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश संजय करोल ने कहा कि आज भारत की रक्षा मंत्री और विदेश मंत्री महिला ही हैं इससे और अच्छे दिन महिलाओं के लिए क्या हो सकते हैं। उनका कहना था कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में महिलाओं का बड़ी श्रद्धा और आदर जनमानस में रहा है। उन्होंने सीता-राम, राधा-कृष्ण का जिक्र करते हुए कहा कि भारत में महिलाओं के प्रति समर्पण भारतीय परम्परा की देन है। उन्होंने कहा कि भारत के संविधान का 14 वां अनुच्छेद महिलाओं और पुरूषों को समानता का अधिकार देता है। इसके साथ ही संविधान सभा में उस समय रहीं महिला नेत्रियों ने राजनीतिक आधार पर आरक्षण के लिए मना कर दिया था परंतु अब इसके लिए भी कवायद चल रही है। उन्होंने कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की है ताकि वह अपने अधिकारों को सही प्रकार से जान पाएं। ❖

क्योंकि ढेर सारे लोगों ने अपने परिजनों को खो दिया है।

बताया कि भूकंप का पहला झटका लगते ही परिवार को लेकर बाहर आ गए।

दुनिया के बड़े ब्रांडों पर भारी पड़ा देशी फैशन

भारत के फैशन बाजार पर 'राष्ट्रीयता' हावी पश्चिमी उत्पादों को मिल रही है बड़ी चुनौती

न्यूयॉर्क टाइम्स न्यूज सर्विस
वाराणसी/वाशिंगटन।

पिछले दो दशकों से भारत की तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था पर दुनिया के कई फैशन ब्रांड नजरें गड़ाए बैठे रहे, लेकिन देश की युवा आबादी व तेजी से बढ़ते मध्य वर्ग के बावजूद इन ब्रांडों को बड़ा बाजार नहीं मिल पाया है। दूसरी तरफ, भारत का पारंपरिक फैशन बाजार लगातार विकास कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय फैशन विशेषज्ञों ने पाया है कि इसकी एक बड़ी वजह देशवासियों में बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना है, जिसका भारत भारत के फैशन उद्योग पर सीधा असर पड़ा है।

अंतरराष्ट्रीय फैशन विशेषज्ञ और 2016 में भारत के फैशन पर शोध कर चुकी सोशल एंथ्रोपोलॉजिस्ट टेरीजा कुलदोवा ने बताया कि भारतीय फैशन की दुनिया में बढ़ते हिंदू राष्ट्रवाद और सौंदर्य के पारंपरिक उत्पादों के बीच सीधा रिश्ता है। 2007 में भारत और यूरोपियन यूनियन के बीच हुई वार्ता के मुताबिक देश में लक्जरी उत्पादों को प्रवेश मिलना था, लेकिन 2014 में भाजपा की केंद्र में सरकार बनने के बाद भारतीय फैशन उद्योग में पश्चिमी स्टाइल के परिधानों की लगातार उपेक्षा हुई। मोदी स्टाइल के कुर्ते भी फैशन उद्योग में एक अच्छा मुकाम बना चुके हैं। देश में चंदेरी का कामकाज और छत्तीसगढ़ के बिलासपुर का चांपा सिल्क भी पश्चिमी फैशन की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ा है। पीएम नरेंद्र मोदी के मेक इन इंडिया कैंपेन का असर भी फैशन जगत पर पड़ा है। मुंबई के फैशन डिजाइनर शैना एनसी ने 2015 में वाराणसी और अन्य सिल्क की पहचान कराई और वह मुंबई में बैठकर पारंपरिक फैशन [illegible]

न दर्द की परवाह की, न हाथ से बहते खून की

उसने हौसले की उड़ान में दिव्यांगता को कभी आड़े नहीं आने दिया। न तो कभी दर्द की परवाह की और न ही अपने हाथ से बहते खून की। यह कहानी है आगरा की रहने वाली दिव्यांग शूटर सोनिया शर्मा की, जिन्होंने हाल ही पैरा वर्ल्ड चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता।

हाथ नहीं हौसला चाहिए: सोनिया ने शूटिंग की शुरूआत रायफल से की थी। वजनी रायफल चलाने के लिए दूसरे हाथ की सख्त जरूरत पड़ती है। सोनिया को इसमें काफी दिक्कत होती थी। सिर्फ बांए हाथ से वह रायफल साध नहीं पाती थीं। असहनीय दर्द होता। हाथ से खून तक बहने लगता था। लेकिन मन में कुछ कर दिखाने का जज्बा था। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। डटी रहीं। शूटिंग रेंज में निरंतर कड़ा अभ्यास किया। मंजिल हालांकि पिस्टल से मिली, लेकिन रायफल से किया जाने वाला कठिन अभ्यास इसकी बुनियाद बना। मेहनत और प्रण के बूते आखिरकार उन्होंने वह कर दिखाया, जो वह चाहती थीं। थाईलैंड में संपन्न विश्व चैंपियनशिप के टीम इवेंट में सोनिया ने पिस्टल से सुनहरा निशाना साधा। वह टॉप-8 में जगह पाने में भी सफल रहीं।

अब ओलंपिक है लक्ष्य: सोनिया ने अपनी उपलब्धि पर कहा, स्वर्ण पदक जीतकर अच्छा लग रहा है। वर्ल्ड चैंपियनशिप में अच्छा प्रदर्शन कर पैरा ओलंपिक का कोटा हासिल करना मेरा लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि चुनौतियों पर जीत हासिल करने को निरंतर अभ्यास और कड़ी मेहनत जरूरी है।

प्रण की जीत: सोनिया की मां जनक शर्मा बताती हैं कि यह सोनिया के प्रण की जीत है। बेटी की सफलता पर वह कहती हैं कि सोनिया ने पूरे परिवार का नाम रोशन कर दिखाया। उसकी सफलता की खबर सुन ऐसा लग रहा है, जैसे में हवा में उड़ रही हूं। जनक कहती हैं कि सोनिया ने अभ्यास नहीं तपस्या की है। हर दर्द को सहा है। लेकिन जो ठाना वह कर दिखाया। आज हम सभी को उस पर गर्व है। सोनिया ने सेंट एंड्रयूज स्कूल की शूटिंग रेंज में कोच अलोक वैष्णव की देखरेख में रायफल शूटिंग को चुना था। इसमें उन्होंने शुरूआती कुछ साल अभ्यास किया। बाद में एकलव्य स्पोर्ट्स स्टेडियम में शूटिंग रेंज बन जाने के बाद वह वहां अभ्यास करने लगीं। शुरूआत उन्होंने रायफल से की थी। लेकिन एक हाथ से रायफल से अभ्यास करना बहुत कठिन तो था ही, निशाना साधने में भी दिक्कत आती थी। स्टेडियम में प्रशिक्षण शुरू करने के बाद सोनिया ने नए कोच की सलाह पर रायफल को छोड़ पिस्टल से अभ्यास शुरू कर दिया। ❖

पहेलियां

1. रात को मुझे भिगोने के लिए डालो ,
   सुबह उठकर मुझे खाओ ,
   ओर अपना दिमाग बढ़ाओ ,
   पर मेरा नाम जरूर बताओ ?
2. श्रीकृष्ण संग रहती,
   अपने सुरों से सबको नचाती ,
   तो बताओ मै क्या कहलाती ?
3. ऐसी काली खेती,
   बिना खाद पानी के बढ़ती जाए,
   महीने में एक बार तो कटवाए,
   फिर आ जाए ?
4. तुम्हारे पैरों की करते देखभाल हम,
   कंकड़ कॉटों से बचाते तुम्हारे पैर,
   अगर दोनों में से कोई एक बिछड़ जाए,
   तो दूसरा काम ना आये ?

उत्तर: 1. चना, 2. बांसुरी, 3. बाल, 4. जूते।

प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय नौसेना की प्रथम महिला लड़ाकू विमान पायलट कौन हैं?
2. इसरो द्वारा सफलता पूर्वक छोड़ी गयी मिसाइल का क्या नाम है?
3. दिल्ली में कुहरे और धुंए का मिश्रण क्या कहलाता है?
4. पाकिस्तान में वर्तमान समय में भारतीय उच्चायुक्त किसे नियुक्त किया गया है?
5. भारत का सबसे ऊंचाई पर स्थित मतदान केन्द्र का नाम क्या है?
6. एनएचएआई ने हि.प्र. के किस मार्ग के चौड़ाकरण को मंजूरी दी है?
7. हिमाचल प्रदेश में को-ऑपरेटिव सोसाइटी प्रशिक्षण संस्थान कहां स्थित है?
8. द्वितीय शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल कहां आयोजित किया जा रहा है?
9. भारतीय गाय की त्वचा में कितने रोमछिद्र होते हैं?
10. स्वदेशी अर्थव्यवस्था हेतु चर्चित प्रसिद्ध पुस्तक कौन सी है?

चुटकुले

महाकंजूस सेठ अपने बच्चों से बोला,

1. ***कंजूस***-जो आज शाम खाना नहीं खायेगा उसे मैं 10 रुपये दूंगा।
   तीनों बेटे 10-10 रुपये लेकर बिना खाना खाये सो गए। कंजूस सुबह बोला।
   अब जो 10-10 रूपये देगा उसे मैं नाश्ता दूंगा।
2. ***मास्टर***-बच्चों पढाई शुरू कर दो पेपर आने वाले हैं।
   पप्पू- मैं तो खूब पढाई करता हूँ।
   कुछ भी पूछ लो
   मास्टर-बता ताजमहल किसने बनाया\
   पप्पू- मिस्त्री ने।
   मास्टर-मतलब किसने बनवाया
   पप्पू- ठेकेदार ने बनवाया होगा।
3. भाइयो एग्जाम का टाइम है
   अगर किसी भाई या बहन को कोई डर है
   तो 2100 रुपये और अपना
   रोलनंबर एक पर्ची पर लिखकर भेज दो, मैं आपके लिए दुआ करूंगा ??
4. बस स्टॉप पे एक आदमी ठण्ड से सिकुड़ रहा था तभी एक लड़की उधर से गुजरी लड़की, इतनी ठण्ड है मफलर बांध लो ना भैया
   आदमी- अरे नहीं मैं तो केजरीवाल की पार्टी से नही हूँ।
5. एक बार नैनो कार और मारुती कार आपस में मिली।
   नैनो - देखा मैं कितनी सस्ती हूँ,
   मारुती -हाँ लेकिन एक बात समझ नहीं आयी,
   नैनो- क्या ?
   मारुती-तेरी आँखें (हेड लाइट) इतनी बाहर क्यों निकली हुई हैं,
   नैनो- और तेरी इतनी अन्दर क्यों धंसी हैं?

उडुप्पी धर्म संसद में मंचासीन विश्वेस्वर तीर्थ, सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत जी एवं डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया

कुशोक बकुला रिम्पोछे की जन्म शताब्दी वर्ष के उद्घाटन समारोह पर मंचासीन अतिथिगण

झंडेवाला देवी मन्दिर में फूलों से जैविक खाद संयंत्र का उद्घाटन करती सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी

संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर हि.प्र. उच्च न्यायालय शिमला के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश श्री संजय करोल अपना वक्तव्य देते हुए एवं सभागार में उपस्थित अधिवक्ता तथा गणमान्य जन

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।